कोइ जस चला पेल रथ हांकी। कोइ पग धरे चढ़े औ थाकी॥
कोइ जस तुरी बाग झुंझलाये। कोइ चापे रेंगे डरपाये॥
कोइ आगे ज्यों दीपक बारा। कोइ अन्धेर करे पतियारा॥

कोई चले उताल गति कोइ कछु बिलँबलगाय।
चढ़ा सो पहुँचा रतनगढ़ गिरा सो गये बिलाय॥

चढ़ा जो जाय रतनगढ़ मेरू। दृष्टि परा चहुं ओर उजेरू॥
जानौ सबै रतनगढ़ बाटा। लायो रतन मनो मुइ चाटा॥
वा शठ जाइ नहीं शठ ताता। सदा रहे तहँ शीतल गाता॥
मठ मंडप साजे सब ठाऊं। बैठे तपा जपहिं सब नाऊं॥
जगर नाथ बैठा पुनि जाहां। बावर हंस गयो पुनि ताहां॥
देख गुरू तेहि निकट बुलावा। पूछा कहां चला किन आवा॥
इच्छा तोर अहै कह ताहीं। कही सो बिथा बैठ यहि ठाहीं॥

चरन टेक रोवा तबहिं इच्छा सुन गुरु मोर।
कारन एक जवाहिरे चल आयो इहि कोर॥

सुन योगी जेहि सुमिरत नाऊं। कठिन सो जाव अबै वह ठाऊं॥
जो कोइ जबै इहां लेआवा। आगे केर खोज नहिं पावा॥
वह तो सातस्वर्ग ते दूरी। सातो स्वर्ग न सरवर पूरी॥
पवन न चढ़ै लौटि मुइ आवै। मेघ रोय मुइ आंसु चुवावै॥
आग न चढ़े होइ बुझमाटी। माटी काह चढ़े वह घाटी॥
मानुष कोट सिद्ध महँ कोई। सुरत डोर गहि पहुंचे सोई॥
सो वह जोतिनिरख लखपावा। गुंगभयो नहिं अर्थ बतावा॥

सुरत डोर यकमारगे तेहि गहि चढ़ा जो धाय।
टूटे मुख डोरेचहे पुनि कत चहत मिलाय॥

सुमिरि गुरू वह सुरत की डोरी। आपुहि दीन्ह बांध हिये मोरी॥

खींचे लिये जाय बरिआई। बांधा जाउ चला वह ठाईं ॥
आयो निशदिन करत पयाना। जन्म सिरान न पंथ सिराना ॥
रक्त मांस ते भोजन कीन्हा। सब सुख भोग निछावर दीन्हा ॥
अब तन रहा रक्त ना मांसू। नैनन नीर रहा नहिं आंसू ॥
हाड़न मांझ गोद सो नाहीं। लागी आग क्षार तन माहीं ॥
नसे सो अरुझ भई सब फांसी। तबहुं न प्रान गयो विश्वासी ॥

हूं सुसेवक वही कर वह मम प्रेम गोसांइ।
जाइ डोर गहि खींचे चला चहूं वहि ठांइ ॥

सुन योगी तो यहै मधु पीये। सांची प्रीत अहै तोहि हीये ॥
चाहे मिला बेग जो हेरिस। जो मारग तैं शीश न फेरिस ॥
आयो नांव जो कठिन पहारा। अब नांघो जो समँद अपारा ॥
लीह्यो नगर मेर की बाटा। उतरो जाय समँद के घाटा ॥
जो कोई चीन जान का चाहै। तेहिका निज मारग यहु आहै ॥
महिपति राय तहां बड़ राजा। सोई दई चहो जो साजा ॥
सो तुम का जो बोहित देई। तेहि चढ़ जाउ चीन का खेई ॥

कासम बेरा प्रेम कर वार पार जेहि नाहिं।
धन्य २ तेई पुरुष शीश बीच तहँ जाहिं ॥

चला बटाऊ लागो बाटा। ताका कहूं समंदकर घाटा ॥
निर्मल पंथ तहां वै पावा। निशिदिन चला घाटपर आवा ॥
नगर तीर यक सागर नीरा। आसन जाय कीन्ह तेहि तीरा ॥
देखा सरवर महा सुहावा। कनक पाट सो घाट बनावा ॥
मठ मंडफ चहुंदिश तप योगू। जप स्नान करैं सब लोगू ॥
आवैं तहां भरन पनिहारी। वही घाट तेहि बैठ भिखारी ॥
बैठ गुरू कर सुमिरन कीन्हा। चेले सबै सो आसन लीन्हा ॥

सुरत लाय सुमिरे वही लाचा बहम लिलाट।
पार जाय केहि कारने बैठ समँद के घाट॥

रैन बसेर जो लीन्ह भिखारी। भोर भये आई पनिहारी॥
ततखन वह राजा की बारी। आइ नहान सखिन लै सारी॥
सागर तीर जो देखे योगी। देख रूप मन भयो वियोगी॥
कहेसि सखिन देखो यह रूपा। दई कीन्ह अस रूप अनूपा॥
सखिन कहा अब कर अस्नाना। पुनि नहाय घरकियो पयाना॥
सखी नहाय बैठ मझनीरा। बाहर निकस पहिर तनचीरा॥
आई अकेल लिये कर माला। चाहे बिहँसि हंस घर घाला॥

कहा हंस सुन बावरी टारे आपन हार।
तोहिं तिरिया बटपारनी यह कंचन बटपार॥

सुन योगी तुम सिद्ध गोसाईं। औ करतार बसे तुम ठाईं॥
जो योगी भा सिद्ध अपारा। तेहि दरशन भावै संसारा॥
मैं चेरी दरशन सिख पाऊं। संग रहौं तो दासि कहाऊं॥
को यह योग जो मारे तोहीं। प्रथम मार लेई जो मोहीं॥
तुम मेरे सो ठाकुर गंगा। अबहीं चलूं रहूं तेहि संगा॥
कहा तपिन बैरिन बटपारी। कत तिरिया संग लेहि भिखारी॥
तो अस कोट तजे घर माहां। भयो भिखारि न देखी ताहां॥

हूं भिखार परदेश पुनि तोहिं नृपति की बार।
निकट ठाढ़ देखे कोउ मोका डारे मार॥

टरै न बार रही बौराई। तबलो आइ सखी सब धाई॥
टेका बांह कहा चल रानी। का योगी के रूप लुभानी॥
रोई तबहिं चलों मैं काहा। हूं चेरी योगी मो नाहा॥
हूं योगिन हुइ संग सिधारौं। कुल परिवार प्रान सब वारौं॥

हाथ छुड़ाइ परी भुइँ ताहां। सखिन सो कांपगई तनमाहां॥
जाइ नगर महं कीन्ह पुकारा। योगिन मंत्र बार पर डारा॥
सुन कोपे सेवक औ राजा। हैं योगी ये मारन काजा॥
उठे रिसाय कुंवर सब ऊंच नीच सब लोग।
पाप नहीं मारे इन्हें अहैं सो मारण योग॥
भयो बटोर नगर चहुं पासा। उरझि परा सिगरो रनिवासा॥
चहुंदिश पुरुष जो साजन लागे। जो साजे सो आवें आगे॥
औ राजा कर बाजि उकारा। सहस बीस दल भा असवारा॥
योगिन लखा कटक सब आई। जाना मीच आय नियराई॥
कहो गुरू अज्ञा का तोरी। आवै कटक लड़े करजोरी॥
गुरू कहा देखो मन बूझी। प्रेमके पंथ मरूं जिन जूझी॥
होउ अधीन देउ शिर नाई। पानी परत अग्नि बुझिजाई॥
खेला चाहो सिद्ध हुइ जान चहौं मैं चीन।
कहां प्राण बांझे अभी काल काल आधीन॥
तबलो घेर सबै दल आवा। तिरिया टेक सो रथ बैठावा॥
निकसी खड़ग शैल समुहानी। मार २ कहि पहुंची आनी॥
तबहिं भिखार भये उठि ठाढ़े। मारो सब मारन जित गाढ़े॥
मोर सो होय मोर ते मोखू। तुमका दैव न लावे दोखू॥
दुख आधीन औ रूप सुहावा। करगहि लीन न हाथ चलावा॥
बांध तपा आगे सब कीने। चले नगर राजा पहं लीने॥
निकसे जाय जो मांझ बजारा। देखैं लोग सबै संसारा॥
नारि पुरुष निरखे सभी कर मींजे लख रूप।
छत्रपती सुत है कोऊ पड़ा आन अंधकूप॥
गये लिये योगी सब ताहां। राजा सभा बैठ पुनि जाहां॥

देखे मन माथे उजियारी । पंडित कहा न होय भिखारी ॥
अहै सो कोइ देशकर भोगी । काहू लाग भयो है योगी ॥
राजा लखत क्रोध भा ताता । लखे न रूप सुने नहिं बाता ॥
आज्ञा कीन्ह की डारो मारी । सहो न आनो दुष्ट भिखारी ॥
पंडितन कहा बूझि मन राजा । तो तपसी मारसि केहिकाजा ॥
यह मुख दिपै मनो उजियारा । अधरम होत होत मुखकारा ॥

यक तो पंथी बिदेश पुनि दूजे तपा भिखार ।
तेहिका मारसि दोस मन लेस न दोष विचार ॥

तुम बौरे मंत्री मत हीने । राज किये योगी का चीने ॥
यह योगी ऊपर जस पानी । भीतर हिये काठ की बानी ॥
बने सोइ बटपार भिखारी । फिरे बिदेश छलत पुनि नारी ॥
हत्या नाहिं जो इन के मारे । पाप करें गर कंथा डारे ॥
पण्डितन कहा बूझि मन लेहू । मारो जिन दिन दुइ बंद देहू ॥
जो इन चाटक मन्त्र चलावा । लीन्ह उतार जबहिं बँदपावा ॥
जब मन चेत होय वह बारी । तब चाहो सो कहो भिखारी ॥

जो यह सुता भिखार सन देइ प्रान यह संग ।
मारस ताह कलंक बिन चढ़े सो तोहिं कलंक ॥

तब राजन तपसी दिश देखा । का बौरे तोहिं कामिन लेखा ॥
कस कन्या पर चाटक कीन्हे । केहि गुन भेख गुरूकर लीन्हे ॥
भेख देख भूलें नर नारी । तोइँ बटपार करस बटपारी ॥
हंस कहा मोहिं मारो आजू । होय मो काज सफल तो राजू ॥
बारी तोर अहै जस अहै । वह पापिन कर गुन को कहै ॥
आयो भेख लिये तो बारा । तुम सो धर्म कीन्ह जिउमारा ॥
जो जिउ मार होय तो काजू । काहेक बिलँब करस अब आजू ॥

शोच न मोहिका देत जिउ यह पीतम की बाट।
आजहि पावों पार मैं जो बलदेउ लिलाट॥

राजहि बहु योगी समझावा। औ मंत्रिन सब बहुत सुनावा॥
योगी पांउ पैकरा डारा। औ बहुतेरे बांध बैठारा॥
चेला सबै पोढ़ के बांधे। मन मन लोह सबै के कांधे॥
नित उठि दूत त्रास दिखलावैं। औ मारन का खड़ग उठावैं॥
समँद तीर नित गाढ़े सूरी। छीन सो दीन्ह कालकी धूरी॥
कहेव तपा मोह का तरसाऊ। हूं निभरम का भरम दिखाऊ॥
हूं सो भिखार अहो जेहि केरा। सो मम तीर अहै चहुं ओरा॥

मारे वहीको राखिये औ कोउ मारन हार।
दूसर मारा चहै कोउ मरा सकल संसार॥

बड़ा कठिन बँद बिरह भिखारी। बैरन काल भई वह नारी॥
पड़े हंकार नगर के माहा। पंथि भिखार पड़े बँदमाहा॥
जहँलों मठ मण्डफ वह ठाऊं। उठधाये सुन योगी नाऊं॥
महा महंत जो नाथ गोसाईं। तेहि संग सब योगी जहँताईं॥
उरधबाह नाना जब धारी। पूरी गिरी जल बास तिवारी॥
जग डंडी औघड़ कनफटा। सेउरा यती बिरही शरकटा॥
ब्रह्मचार सेउरा संन्यासी। पांच अगन निर्जला अकासी॥

दूधाधारी संगमी सूफी दरश कबीर।
भये सहाय योगिनके आय महीपति तीर॥

राजैं धाय चरन शिर नावा। चरन धूरलै नैन लगावा॥
पूछा कहा मया तुम कीन्हा। कस इक संग गौन पगदीन्हा॥
आयसु होय करूं मैं सेवा। कस आये दरशन देदेवा॥
कहा नाथ रे बौरे राजा। हम तो नगर जो स्थलसाजा॥

तहां सो आनँद से परदेशी। तिन दुख देत भीख नहिं देशी॥
योगी दुखी होय सुख खोई। सब जग फिरैं न मारै कोई॥
तोहिं तपसी बांधे औ मारे। हत्या तोहिं अरे हत्यारे॥

पापी निठुरा यान मन अबहूं छांड़ भिखार।
नहीं शाप तपसीन के होई नगर उजार॥

तपसी ते डर मानिस राजा। कर सेवा जनि बूड़स काजा॥
तपसी शाप जगत जरिजाई। भयो शाप तिनहिं बिलमाई॥
तपसी शाप बरस कर मीरा। गयो हिराय न काहू हीरा॥
तपसी शाप अजमकर देशू। रहा न कोउ तहँ शाह नरेशू॥
तपसी शाप अंत कर राजा। क्षार भयो तेहि काहु न साजा॥
तपसी शाप लंक भई क्षारा। कंस बिलान तपसि कर मारा॥
तपसी शाप न बाचा कोई। बेग सम्हार सहस तो होई॥

तपी शाप जेहिका भयो गयो नर्क के माह।
तीनलोक के लोक सब बहुर फिरेसो नाह॥

सुनिये नाथ महंत गोसांई। को तपसी परखो इहि ठाई॥
मैं अब राज लाज मोह हारी। खोइस आय सो नष्टभिखारी॥
मैं ऐसे तपसी बहु देखा। कारन भोग भये यह भेखा॥
तपा ऐस नाहिं होय भिखारी। इनसे फैली पृथिवी सारी॥
मन नाहिं मार सकें अपराधी। काहेक लेय योग तपसाधी॥
तिरिया देख जो दृष्टि चलावै। द्रव्य काज घर २ उठिधावै॥
भोग देख नहिं तृष्णा मारें। कामिन देख न काम सँभारें॥

तुमसो तपी भिखारिन मैंसो लखा पहिचान।
वैसो निठुर बटपार जन रहैं तपाके पान॥

सुन राजा सब ऐस न जानू। सब महँ एक सिद्ध पहिचानू॥

जो पै सिद्धि जगत ना रहै। तौ पृथ्वी डोलै जग बहै ॥
सिद्ध सो आन कीन जगकेरे। जगत तरे उनके चक्र हेरे ॥
सिद्ध सहाय तरे संसारा। साधुन साथ फिरे करतारा ॥
सिद्ध सहाय पंडवन जीता। सिद्ध शाप परलोंहुइ बीता ॥
सो तपसी है सिद्ध बियोगी। कर सेवा डर मान ले भोगी ॥
मग हिरदे नहिं देहि सरापू। धर्म नशाय होय तेहिपापू ॥

जन अभिरस योगीन ते जनि अरकंद अकास ।
समंदतीर तोहतखरे एक दिवस तेहिजास ॥

सुनो नाथ मैं घाट क राजा। जेहिलो काजसबै मोहिं छाजा ॥
चहों रंक का पार उतारों। चहों धनी का मार उतारों ॥
मोरे घाट चले सब कोई। परखों बैठ जैस जो होई ॥
सिद्ध कहां जो सिद्ध बखानो। सिद्ध गुनन परगट पहिचानो ॥
सिद्ध की देह क्रोध नहिं होई। सिद्ध तपा यमडारै धोई ॥
सिद्ध कया कत बैठे माखी। सिद्धहु पुनि कहलावै आखी ॥
सिद्ध कया नहिं देखे छाया। सिद्ध एक दर्पण निरताया ॥

सो पुनि सिद्ध कहावै जो तिहुँ लोक फिराहि ।
ओढ़ै चामी सिंघ कर घरका संग न जाहि ॥

राजा यही जान जिन भूलो। सबै बृक्ष कर एक न फूलो ॥
सबकर मूल एक है पानी। पपिहा प्रेम स्वाति की बानी ॥
देखो सब पानी निरताई। पै जस ठाउँ तैस उपजाई ॥
समन्द महं परे खार करिडारी। सीप पेट महं मोति संवारी ॥
पड़े मुख नाग पड़े बिपतीता। पड़े गजशीश गजाधर बीता ॥
कदल कपूर स्वाति की पानी। गिर पर पड़े सो कंचन पानी ॥
भीमकचूर स्वाति के बरसे। अभी सुबास स्वाति के बरसे ॥

पाहन पारस एक महँ दूषन नाहिं लगाइ।
चाहे परखन हार जो परख पारस ले जाइ॥

योगकथा मैं परखन राजा। बिसवन घाट मैं परखे काजा॥
जैसे कनक कसौटी कांची। परखों मृग कस्तूरी साची॥
परखों मीत विपति दुख माहा। परखों शूर पड़े रन चाहा॥
प्रेम कसौटी परखों योगी। धर्म न्याउ महँ राजा भोगी॥
परखों न्याउ सत्त दुख पड़े। परखों सती सहूं की जरे॥
परखों मनुष जो पड़े नियाऊ। परखों बचन सत्य औ भाऊ॥
सो मैं योग पुरुष यह पावा। सतहै निष्ठ जो मनै चलावा॥

बसे कसौटी हाथ मोहिं बांध्यों पुरुष भिखार।
जियत न छांड़ों योग कह जबलों फिरे न बार॥

सुन राजा तोंय तपसी मारो। आपन शीश भार महँ डारो॥
योगी रखे न अस्त्र कटारा। योगिन एक अस्त्र करतारा॥
योगी लड़ैं न अस्त्र उठाई। मारे कोऊ देइँ शिरनाई॥
योगि मार जो मारन चाहा। तोय असहोय दोउजग लाहा॥
प्रथमैं होइ जगत मुख कारा। पुनि सत जाय होय अँधियारा॥
मृत्युलोक कोइ लेय न नाऊं। स्वर्गलोक कोई लहे न ठाऊं॥
लोक पतार धरन यक चाहा। तऊ न ठांउ नरक लो लाहा॥

ये तपसी करतार के तीन लोक इन केर।
इनते रार बढ़ाइ शठ अपन ठांउ कहुं हेर॥

योगिन पड़ा आइ दुख गाढ़ा। को अस पुरुष रहे तहँ काढ़ा॥
शब्द पड़ी रोवै वहि देशा। करै उपाय न टरै कलेशा॥
देखा तहँ मंडफ उजियारा। कंचन लीप राख रतनारा॥
तहां मूर्ति कमिख्या केरी। पूजैं राय रान औ चेरी॥

शब्द उपाय यही मन हेरा। कीन्हेसि बेष कमिरुयाकेरा॥
बैठ जाय वह मंडफ माहां। राजा न्हाय गयो पुनि ताहां॥
देख रूप मन महँ हुलसाना। आज दरश मम भाग तुलाना॥

जीभ चढ़ाई फूल वह लीन्हेसि वह मुख मोरि।
कांप उठा राजा तबहिं काह लागि मोहिं खोरि॥

सुन राजा बौरे अपराधी। कस डाढ़े का मारसि बांधी॥
तिरिया चरित न कीन्ह विचारा। तिरिया मते बूड़ संसारा॥
तिरिया जल महँ आग लगावै। तिरिया सूखे नाउ चलावै॥
तिरिया क्षार पुरुष मुख मेलै। तिरिया छल नाटक सब खेलै॥
जस होला बंजार की नारी। कंथ मार सँग मीत सिधारी॥
तपसी है चंचल तू नारी। लोभी रूप सो देख भिखारी॥
वह वह कह चाहे बश कीन्हा। कत समझे काहू सुख दीन्हा॥

जागे सोवत होइ कछु जागत सके न जाग।
तैं योगी बाधे बृथा कन्या तोरि अभाग॥

अबहूं छांड़ सो बेष भिखारी। ओगहि राख को लक्षन बारी॥
तोय जानेसि तपसी के मारे। बरसे आग नगर महँ सारे॥
देउता तेंतिस कोटि जेहिं ताहीं। देहैं शाप बचम केहि ठाहीं॥
हूं सो आग नगर तो लाऊं। अधरम ठांउ छाँड़ि बन जाऊं॥
तोय तिरिया मत अहसभुलाना। तब जानेसि जब जाये प्राना॥
जेहिलग काज जगत महँ हीने। ते सब अहे नारि के कीने॥
तिरिया मते कौन नहिं गयो। केहि घर काज नार मत भयो॥

आउ पिता जो जगत कर छोड़ दीन्ह कैलास।
लीने तिरिया के मते नारद मिटा सुबास॥

कहि यह बचन अलोप होगई। राजा हिय शंसो तब भई॥

आवा चल योगिन के तीरा । आपन हाथसो खोल जंजीरा ॥
चरन टेक बिनवै करजोरी । राख गुसाईं तू पत मोरी ॥
हूं अधर्म तुमने जो कीन्हा । अन्त सो दुःख आप मैं चीन्हा ॥
तुम अवगुन दिश लखो न मोरी । तारो मोह सो धरम निहोरी ॥
सेवा करूं गुसाईं केरी । हूं सेवक औ रानी चेरी ॥
डारो क्रोध हियेते धोई । जिउ बलदेउ जो आयसु होई ॥

तुम तारन पापी अहों मिलों सो पाट लपेट ।
तुम जनि पाप बिचारहू अवगुन डारो मेट ॥

हंस कहा सुन महिपत राजा । मैं रिस क्रोध करूं केहि काजा ॥
दुख मोरे संग जनमत आवा । जेहि दिश जाउँ सो आगे धावा ॥
दुख ओढ़न दुख डासन मोरा । तेहिमा दोष देउँका तोरा ॥
कह मैं दोष धरूं औ खोरा । जो कछु करे सो ठाकुर मोरा ॥
जेहिपर भोग निछावर कीन्हो । दुख सम्हार के मारग लीन्हो ॥
बेष धरमते बोहित पाऊं । देऊं शीश तो पंथ सिधाऊं ॥
जेहि सो प्रान लाग सो मोरा । पहुंचो पार धरम सब तोरा ॥

धरम राज तोहि जानहूं बोहित चढूं जो आज ।
मैं मारग येही लगूं सुफल बसै तो राज ॥

तब राजैं शिरनाय मनावा । हूं सो राज दीन्ह गुरुपावा ॥
बोहित साज खांग नहिं अहै । पै बिनती सेवक अस कहै ॥
का अस काज चीन महँ जाहू । केहि कारन इतना दुख साहू ॥
यह तो समँद कठिनहै खारा । सहस कोस तक जायकोपारा ॥
हंस कहा दुख जान न राजा । हूं सोभिखार भयेजेहि काजा ॥
अहे चीन वह बिनै निहोरी । रहूं कहां खींचै गहि डोरी ॥
छिन२ बिलंब होय दुखभारी । देहु भीख जो चले भिखारी ॥

मगर मच्छ का खाइये छोड़ काढ़ पुन केहु ।
तुम जनिभरम सुनहु धरम काज कै देहु ॥

राजैं जब निहचो [illegible] पावा। बोहितदीन औ साज चढ़ावा ॥
राखी थांभ मंदिर महं बारी। आय घाट सब चढ़े भिखारी ॥
जहँलग बोहित द्रब्य जो दीना। सो सब दान घाट पर कीना ॥
दान दिये विधि लावै पारा। दोउ जग दानदिये उजियारा ॥
धन वे पुरुष दान जिन दीन्हा। धन वे प्रेम पंथ जिन लीन्हा ॥
दे जग दान जो बोहित पेला। गा जगभूल प्रेम जो खेला ॥
बोहित चढ़े सामुहे धाई। जानूं मेघ पवन चढ़िं आई ॥

बोहित पानी पवन भे समँद लहर भई ठाढ़ ।
देखे ठाढ़ समन्द कहँ रहा नैन अस काढ़ ॥

आये मांझ समँद जल माहा। गये औसान देख आगाहा ॥
उठै लाग जब लहरहिलोरा। जानूं स्वर्ग जोट चहुंओरा ॥
उछलैं मगरमच्छ घड़ियारा। कांपे मन लखि परलो धारा ॥
तबलो तहँ कछुआ उलथाना। योगिन पंथ घाट का जाना ॥
आवे दृष्टि जोक छिपि पीठी। जानो घाट पड़ा सो दीठी ॥
खेवट हंस घाट कहं आवा। यह तुम का कछुआ दिखरावा ॥
तुम समन्द गुन जानो नाहीं। यक २ जन्त अहै यहिमाहीं ॥

वार पार यह नाह कछु काजाने कहँ पार ।
सुमिरौ एक निरञ्जनै पर्यो आय मँझधार ॥

यही सो ठांउ समँद भंडारा। बूड़े आन सकल संसारा ॥
उलथे मगर मच्छ अत गाढ़ी। लीले सहूं सो गिरवर ठाढ़ी ॥
उठै लहर ज्यों परलै आवै। स्वर्ग पताल एक लै लावै ॥
अहै सो गुन तो तै करतारा। पाप धरम सो करै नियारा ॥

तिलभर धरम पारलै आवै। तिलभर पाप बूड़ बैठावै॥
यही सो पन्थ गाढ़ सबकाहू। कोउ न चलेअसजान निबाहू॥
है सो जियन मरनहै दोई। उतरा [illegible] अमर भा सोई॥

सत्य धर्म औ पाप सब आप जाइ पहिचान।
जेहितन धरमसो पार भा भरम भरा तेहि हान॥

हंस कहा सुन खेवक मोरी। बोहित आन चढूं मैं तोरी॥
किह्यो ऐस जस खेवक नाऊं। पाऊं तीर घाट जेहि ठाऊं॥
पाप धर्म मो लखे बिधाता। हूं मैं तपित वह तपसी दाता॥
अब भरोस मोहिं का कछुनाहीं। वहै भरोसु गहे जिन बाहीं॥
प्रानदेत कछु शोच न मोरी। एकै शोच करूं करजोरी॥
फिरे न यह मारग तै बीरा। कै जिउ जाइ कि होवै तीरा॥
कुशल कहां जब होय औतारा। होय कुशल जब पहुचूं पारा॥

धरमवन्त मोरा गुरू हूं मैं तपत अपार।
तेहि भरोस हूं निरभरम खेय लगाई पार॥

हांका बोहित छूट कमाना। तब गा छिप दो मांह समाना॥
निभरम होय जब बोहित धावा। ततखन एक मछक दिखरावा॥
काना अण्ड औ बाज निकारा। तब आगेते टख्यो पहारा॥
ततखन लहर समँद की आई। जानूं समँद उठा उबलाई॥
भयो समन्द सबै उठि ठाढ़ा। भुम्मि सो लेत गगनलोबाढ़ा॥
मानो होत जो परलो आवा। योगिनदेखि भरम मन खावा॥
गुरू सत्त कह धीर बँधावै। कहो सत्त बिधि पारलगावै॥

कह खेवट योगी सुनो अब सुमिरों करतार।
यही ठाउँ सो गाढ़ है दई लगावै पार॥

योगिनसत्त सुमिरि चितलावा। तबलो धाय जो परलो आवा॥

बोहित पड़ी लहर के माहां। बुड़ गये सबे कहांते काहां॥
कोइ तो बहे उड़ बाट हिंडोला। कोइ तो खाय पवन के झोला॥
कोइ पड़ा बिधि मांझ हि डेरा। कोइ तो बूड़ पाप जिन जोरा॥
कोई हिलक सों पार तिराना। कोई गुरु सों बूड़ बिहाना॥
पलमहँ भा परलोकर लेखा। कोई औघट औघाट न देखा॥
कोइ औघाट कहां भये केऊ। कोइ तौ सहूं घाट के बहेऊ॥

कासिम पूरुष प्रेमके कई गये औगाह।
जिनतन प्रेम ना ऊपजै पड़ेभँवर बिधिमाह॥

योगिन तीर घाट जो पावा। देखा घाट प्रान घट आवा॥
पवन सुबास जो आवन लागा। डाहे प्रान सो पल है जागा॥
कहो शब्द बोलो सत बाता। काहे आज मम शीतल गाता॥
डाढ़ी देइ सो अति बल पावै। पवन सुबास कहांते आवै॥
कहा शब्द तुम जीता योगू। पवन सुबास ले आवत भोगू॥
तुम तप कीन कया पुनिजारी। देव देखावै अब उजियारी॥
तुम तो घाटहि अस्थल लेऊ। मैं तहँ जाउँ जो अज्ञा देऊ॥

जांउ पास सो कँवल के अर्थ सुनाऊं जाय।
आवै साज जो चीनते चलो सो साजबनाय॥

हंस कहा तो बेग सिधावो। ले अस बचन बेगचल आवो॥
मैं सो चला बार कहँ आऊं। रहा न चहूं कहां बिलमाऊं॥
चली शब्द चीन का आगू। योगी चला तबहिं पछलागू॥
नगर नगर औ गाउहिं गाऊं। लाग सुनै सो आपन नाऊं॥
गंवहि ठाँउँ लोग उठिधाये। वही ब्याह की बात सुनाये॥
पूंछे सब योगिन ते धाई। कौन देश ते आयो भाई॥
कोसो देश हंस सुल्ताना। देख होय तो करो बखाना॥

उत्तर देइ बियोगते सुने जो आपन नाम।
हम योगी परदेशिया का जाने केहि ठाम॥

ब्याकुल भई जवाहिर बारी। योगिन बरनै रही दुख जारी॥
चातिक भई स्वाति की आसा। शब्द गई फिर आये न पासा॥
अहै कैस अपराधी देशा। जो कोइ जाय न कहे संदेशा॥
शब्द गई सो बहुरि न आई। कबलग रखूं प्रान बरिआई॥
यही शोच नहिं लागी आंखी। भई सो रटन पपीहा पांखी॥
यकतो पान फूल अस नारी। दूजे बिरह आग महँ डारी॥
दुख भीतर दुख बाहर छावा। ब्याह न भा दुख परलो आवा॥

दुखी पुरुष नारी सबै दुखी रहा जग छाय।
तब दुख बिरह बियोगमहँ शब्दगई तीराय॥

पंखी बेप गई फुलवारी। भइ कामिन पुनि रूप सँवारी॥
टेके चरण कँवल के जाई। हुलसे गात आंख भरिआई॥
घबराउठी मिली हुलसाई। नैनन नीर चला झरलाई॥
उलथा हिया जो सरवर धारा। चले आंसु ज्यों छूट पनारा॥
मिल्यो आय अब प्रान सहेली। कहां रह्यो मोहिं छांड़ अकेली॥
मैं यक पीउ बिछोहते जारी। दूजे भयो तोहबिन कारी॥
बिरहआग इत मोहिं दुखदीना। निठुरकाल ममप्रान न लीना॥

क्षार भयो तन बिरह जर मनै न रहो सम्हार।
का जानूं केहि कारने मोहिं राखे करतार॥

तू ले शब्द डाह दे रोई। तोरे दुख न जरा सब कोई॥
मैं तो चरन लगायो माथा। जिउ तो हाथजरूं तोहिसाथा॥
मात पिता अपना तज दीन्हो। तोरे दुखन लाग दुख लीन्हो॥
गिरैं आंसु सावन झर लाई। सखी रोय कर शीश छुड़ाई॥

हिये लाय मुक्ताहर भेंटी। तोष मम आउ जन्मकी बेटी ॥
हुलस मिलीं सब सखी सहेली। पलु उठीं सूखी जो बेली ॥
पुनि सो तीर कँवल बैठई। शीतलकीन्ह जो बायु डुलाई ॥
पूछै लाग सहेलि सब कहो शब्द शुभ बैन।
अहै दूर की नेर अब देन हार सुख चैन ॥
पूंछो काह अब कहूं संदेशू। पहुंचा आय निकट गा देशू ॥
तुम जानो हमहीं दुख दाहू। वहकर दुख अस होय न काहू ॥
जबहिं चला गर कंथा डारी। सिगरो देश सोभयो भिखारी ॥
अहै सो रूमपती कर बारा। लिये दल लाग संग संसारा ॥
सिगरो रूम उलभ्र तहँ आवा। फिरगा तबहिं पंथ नहिं पावा ॥
पांच सहस पूरुष गुन भारी। ते आये हुइ संग भिखारी ॥
मारग चलत पड़ा दुख गाढ़ा। तहँ तहँ ठांव दयो गहिकाढ़ा ॥
पहुंचा आय सुघाटपर नांघ्यो समँद अपार।
जाइ जो कोई साजले तब आवै चल बार ॥
सुना जो दुलह घाटपर आवा। हुलसामँदिर नगर सुलछावा ॥
हुलसी नारि सुनत यह बाता। मिटगा दुःख भयो सुख राता ॥
सखी सो धाइ शाह पहँ जाई। कहसुनशाह शब्दचलिआई ॥
आवा हंस घाट उपराहीं। योगी बेष साज संगनाहीं ॥
ले कोइ साज जो बेग सिधावै। तब वह साज बार चलिआवै ॥
सुन सुल्तान हुलस अस जागा। शोभा साज सँभारन लागा ॥
साजे साज सबै सुल्तानी। धाये पुरुष लेन अगवानी ॥
साजे हस्ती घोड़ सब बाजे अनँद बधाउ।
निकसे लोग सो लेनकहँ लेराते पहिराउ ॥
निकस चली लोगन की धारा। मंदिर कोट सब गयो सँवारा ॥

छांड़ि नगर बाहर बांहराने। तबलो वे आगे नियराने॥
देखा निज आवहिं जो योगी। उतरे तुर्ग छांड़ सब भोगी॥
वह जो जोत सूर लखपावा। भइपरतीत औ शीश नवावा॥
क्षर लपेटे लखा जो मोती। भयो शोच मन देखत जोती॥
तब कर जोर ठाढ़ भे आगे। बिनती करें प्रेमरस पागे॥
हस्ती चढ़ो उतारो भेशू। चलो नगर आयो तुमदेशू॥

कहा यती योगी अहूं तज्यों छत्र औ राज।
तूने बेष उतारहै तुम बिनवो केहि काज॥

तब सेवक पुनि शीश नवावा। वै हमका तुम लेन पठावा॥
हस्ती घोड़ लेउ सुखपाला। काढ़ो कंथा गरकर माला॥
जेहि कारन तप लीना योगू। सो अबलेउ करो संयोगू॥
तप औ योग रहे तब ताईं। जबतो सिद्धि न करै गुसाईं॥
बागा पहिरि होउ असवारा। होय सुल्तान चलोघर बारा॥
जेहि मां देखि हँसे ना कोई। हमका लाज जगत ना होई॥
तुम सुल्तान रूमपति राजा। असनहिंकरो जो होवे लाजा॥

करो सवारी नगर कहँ तजो भिखारी भेख।
तुम सुल्तान सो रूमके कहैं लोग का देख॥

कह बावर मोहिं हँसिये कोई। भयो भिखार लाज मत खोई॥
जो मोहिं होत लाज ते काजू। कत मैं चलत छांड़ के राजू॥
जो मोहिं कीन्ह सुरंग भिखारी। सोकत अहै सम्हारन हारी॥
जबलौं दरश दृष्टि नहिं आवै। तबलौं चैन भोग कत भावै॥
कहां अहै वह दरशन भोगू। जो दै दरश उतारै योगू॥
पानी मोर वही के हाथा। भोग सो मोर वही के साथा॥
की मोहिं भोग दरश वह देई। कै वह प्रान हाथ से लेई॥

मिलिके दीन बिछोह जेहि के जो ऐसभिखार।
सोई लेइ उतार अब दूजा कौन उतार॥

तजा न गरते कायर कंथा। सम्मुख चला चीन के पंथा॥
आगे चले चीन का योगी। पाछे लाग चले सब भोगी॥
पैठे आइ नगर के माहां। धावा लोग देख सब ताहां॥
सुना जो दूलह बेष भिखारी। भयो सशोक पुरुष औ नारी॥
देख बेख प्रथमै सब कोई। धन यह पुरुष नारि धन सोई॥
धन वह नारि रूप जिन पावा। धन यह पुरुष तपाहुइ आवा॥
यहि बिधि चला वार कहआवा। वार दुवार लोक सब छावा॥

जैसे देखन दुलह का चढ़ीं मंदिर सब नारि।
देखनका तपसीचढ़ीं अहै सो दुलह भिखारि॥

नेरे भये बाट के जाई। उठ सुल्तान मिला हिय लाई॥
औ गहि बांह निकट बैठावा। शीतल कीन्ह सो बासलगावा॥
औ पंडित सब निकट बुलाये। पूंछे लाग अर्थ निरथाये॥
कहो हंस तुम आयो आजू। की आगे देख्यो यह राजू॥
कहा हंस यह दूसर बारा। आयो जस लायो करतारा॥
एकबार दूलह हुइ आयो। ब्याह भयो पै रहन न पायो॥
अब आयों तो यह रंग कीन्हे। चीन लियो जस चाहो चीन्हे॥

परखे परखन हार सोइ वहि मूरत वहि जोत।
उठे क्षार जो गगनलौ यहां मिले नहिं वोत॥

कहा तबहिं जगमग यह जोती। तुममध समँद सीप यकमोती॥
तुम निर्मल को परखन हारा। तजो योग आयो घरबारा॥
कहां हंस कंथा को काढ़े। काढ़न हार सो दिन २ डाढ़े॥
जिनगर मेली प्रेम की फांसी। सो न करै माया बिसवासी॥

तबलों मोहिं प्रतीत न आवे। जबलों आप न दरश दिखावे॥
का जानूं धों केहि घर माहां। पै मोहिं अंत फिरावे काहां॥
आयों घर है भेख भिखारी। तबहुँन दरशदिये सुकुमारी॥

हूं सो भिखारी दरशकर योग कियो केहिकाज।
सो नहिं दरश दिखावै कौन काज ये राज॥

ना माना केहु कितो मनावा। तबहिं मंदिर ते धाय बुलावा॥
कह सुल्तान धाय जो आई। वे समुझावैं मंदिर बुलाई॥
सुन सो धायगई कैलासा। बिहँसत गई कँवल के पासा॥
धनतोयँ बार भाग अस पावा। जो तो कंथ तपा हुइ आवा॥
अब तुम तेहि सेवा चितलावो। छांड़ योग जो तुम समझावो॥
सुन पिउ बरन चले धन आंसू। पिउमोहिंकाज कीन्हतननासू॥
वै मोहिं लाग कया तप कीना। मैं जिउ चहूं निछावर दीना॥

आवै हिरदे भीतरै धरे नैन पर पाउँ।
वे योगी मैं चेरि तै उनते कहा लजाउँ॥

चला हंस मंदिर पग दीना। चेरिन ओट जो चादर कीना॥
दोउ दिशि चौकी कनक बिछाई। बैठे नारि पुरुष दोउ आई॥
चेरिन टरीं निकट ना कोई। रहे सो नारि पुरुष तहँ दोई॥
कोकिल बिधि बोली तब नारी। जानो फूल झरे फुलवारी॥
पूंछा कहां लखे मोहिं पायो। जो दुखमह योगी हुइ आयो॥
देख्यो दरश सुन्यो की नाऊं। कौन भेद आयो तेहि ठाऊं॥
मैं तब रहूं मांझ कैलासा। कतपायो ममबास सुबासा॥

जेहि बिधि आदिहि मिल्यो तुम रह्यो मांझ कैलास।
सोई अर्थ बताउ पुनि का तुम किह्यो हुलास॥

सुन धन बात कथा इक अहे। आगे कहूं आज को कहे॥

हुइ दूलह आयों तो बास। पुनिभा व्याह गयो सो नारा॥
तुमके बरन सेज पर आई। तब हम बांह गही बैठाई॥
तुम अमृत हम भोग जिवावा। औ जलपान सुवास पिआवा॥
दीनो जो तुम छाप निशानी। अहै सो हाथलियो पहिचानी॥
औ तुम कनक अंगूठी देऊ। आपन दीन परख सो लेऊ॥
तब निज हाथ पान तुम दीना। मैं सोवा सेवा तुम कीना॥

बचन अनेक बिसरि गये याद परत नहिं एक।
भेंट होय जो वहै बिधि बरन सुनाऊं टेक॥

बिहसी नार बचन रस पावा। पाटखोल मुख दरश दिखावा॥
लौकी जोत चन्द्र उजियारी। मोहि पड़ा लखिरूप भिखारी॥
मोही कमल बरन पिउ देखी। थके ज्ञान लख बेष सरेखी॥
पुनि होय चेत चरन शिर नाई। लाजकिये मुख बचन सुनाई॥
तुम मोहिं लाग सह्यो दुख पीऊ। मैं अब करौं निछावर जीऊ॥
अब धन कह चेरी कर लेहू। कै यह बेष छांड़ि पिय देहू॥
देख बेष मन सूखी नारी। मैंपापिन पिउ कीन्ह भिखारी॥

रहो सदा जो योग गहि धन योगी कर लेउ।
बेष बिसारो तपाकर अस मांगन पिय देउ॥

निकस हंस बाहर तब आवा। ठाढ़ सभा सिगरो शिर नावा॥
नेगी लोग देखि सब धाये। चौकीकनक सो आन बिछाये॥
तापर हंस बैठ सुख धारा। मंजन कीन्ह औ बेष उतारा॥
कनक जड़ाऊ बांधा चीरा। तापर कलंगी रतन गंभीरा॥
पहिना अंग बियाहू बागा। भा दूलह जग देखै लागा॥
काढ़ा बेष जहां लग साथी। भे राते सब संग बराती॥
बढ़ी हुलास भयो चहुंपासा। भा मंगल सिगरो कैलासा॥

फिर मांड़ो छावा भवन भयो सुमंगल चार।
घर २ दीपक बार पुर जगत भयो उजियार॥
भये अनंद घर मांड़ो छावा। देन अशीश जगत सब आवा॥
आश पूजि नेगिन की आई। भयो हुलास नगर महँ छाई॥
बाहर बाजे अनँद बधावा। भीतर सखिन सुहाग सोगावा॥
खोला कंचन रतन भंडारा। लागा दान होय संसारा॥
होन लाग चहुंदिशि रँग रागा। सुख उपजा दुख दुर्जन भागा॥
हिये हुलास आन परगासा। होय बसन्त फूला कैलासा॥
तरलई बार सबै रतनारी। जान छत्तीसो जिन फुलवारी॥
नगर कोट घर बाहरे राग रंग जग भूल।
राते नारी पुरुष सब रहे बसंत अस फूल॥
दुलह संवार पाट बैठावा। मानो आज विआहन आवा॥
भये पुरुष सब संग बराती। बैठे सभा जो पांती पांती॥
देख्यो हंस सो दृष्टि पसारी। वही सो रैन भई उजियारी॥
वही बरात बैठि पुनि संगा। करे शोच मन होय न भंगा॥
देखे लोग वही सब भला। अहै सो दुलह भानु निर्मला॥
वही पुरुष सेवक हैं आई। चांन सो भोजन भोजजिवाई॥
प्रथमहिं जो जल झार मंगावा। पुनि सुभान के हाथ धुलावा॥
आने लागे भोग सो बरन बरन उजियार।
महा सुवासग जेवहीं रतन जड़ाऊ थार॥
आने विरञ्ज एकी सो बानी। ता मैं बरन बतीसो आनी॥
आवा नान चौंसठ परकारा। एक सो एक अनूप संवारा॥
आये सहस थार सकराना। परम सुबास न जाय बखाना॥
दूध दही चावर रस आई। तरुन होय बूढ़ो जो खाई॥

जब पुरुषन वह कौर उठावा। कोट सवाद कौर यक आवा ॥
हंस सो सुमिर रहा दिन सोई। भोग किये बिछुरन दुख होई ॥
इक दिन खाय आजलो रोवा। काफिर खाउँ जबहिं अस खोवा ॥

तबहिं भोला भोगकर बिछुर गयो मो साथ।
अब सो मर्म सब जानके काबोरों फिरहाथ ॥

सेवक देखि सो लाग मनावै। कस सुल्तान न कौर उठावै ॥
की है फीक लोन सम नाहीं। की कुछ खोरलाग इम माहीं ॥
हंस कहा कुछ अहै न खोरी। हूं जेहि टेक टेक है मोरी ॥
जन्म गँवाय भोग नहिं खावा। जैसे वे निज हाथ खवावा ॥
अब फिर खाउँ जो आप खवावै। नहिं मोहिं भोग कहांते भावै ॥
जैसे प्रथम खवाइम हाथा। तस फिर खाउँ वही के हाथा ॥
लोगन देखा बहुत मनाये। हाथ धुवाय सो थार उठाये ॥

गई सो चरचा मंदिर महँ दूलह भोग न खाय।
वेग सुपाट बुलाय के मांगा मंद्रिर बुलाय ॥

प्रथमहि पाट संवार बिछावा। कंवल संवार तहां बैठावा ॥
धाई सखी दूलह के पासा। कहा सो हंस चलो कैलासा ॥
तुम जो तपाकर भेष बनावा। सो तुम भोग कहांते पावा ॥
हुलसा हंस मन्दिर पग दीना। हुलसतधायसखिनगहिलीना ॥
कंवल के तीर भंवर बैठावा। हुलसा मन इच्छा जो पावा ॥
चमक जोत पट घूंघट माहां। बिहसी धन बैठी संग नाहां ॥
दरस गये दोउ देख अघाई। तबलो सखी नीर लेआई ॥

हाथ धुवावे बहु रतन कँवल धोयकर खोल।
सखी सकुच सकुची धनू सकी न पिउते बोल ॥

खावर थार लीन्ह रस मेली। दोउ आगे अस धरे सहेली ॥

धन सकुची नहिं शीश उठावै। पै पिउ कारन हाथ चलावै॥
तब पीतम रस कौर उठावा। जोकरकंवल कंवललखिपावा॥
धन सकुची घूंघट के माहा। गुप्त कही अस खाउ न नाहां॥
जो लालसा करो बहु भांती। सो दिन देउ न आजकी राती॥
पिउ हिरदे अस अर्थ जनावा। लीना राख हाथ नहिं खावा॥
तबहि सखी यक हाथ धुलावा। बहुरि जुगतिते पान खवावा॥

कंवल हाथ लै आपने दीन कंथ कहँ पान।
पुनि सो सेज सवांरिके चला सेजपर भान॥

चली सखी सब भान के संगा। करे हुलास भरीं रस रंगा॥
देखे भँवर कँवल नहिं आवै। पूंछा कँवल बिलंब कस लावै॥
सखिन कहा सुन कमल भिखारी। वह तो चीनपती की बारी॥
बारह अभरन जो कै लीये। तू क्यों आन सेजपग दीये॥
गयो जो भान मांझ कैलासा। देखे बरन वही चहुँ पासा॥
कनक ईंट कपूर कर गारा। लागे रतन करैं चमकारा॥
कनक खंभ लागे चहुँ पांती। तेहिपर कीन्ह चित्र बहु भांती॥

मुक्तन चून छिपायके रही जो दर्पण वान।
मलियागिर छिरकाय के पूररही अघ्रान॥

तहां सुराती सेज संवारी। पांउ धरत लचकै सुकुमारी॥
फूल चुनी रस सेज तुराई। चादर सेत सो तारबनाई॥
बंद कसे ताने सब ठाऊं। तापर भान धरा जब पाऊं॥
लागी धनकर करै सिंगारा। खोला अभरन केर पिटारा॥
बैर वियोग जो धरा उतारी। चीर सुभग पुनि लाग संवारी॥
कै मंजन पहिरा रंग सोहा। बिरहिनभइ दुलहिन जग मोहा॥
चोटी गूंद जो शीश संवारा। शीश चला मनछाड़ पतारा॥

मांग संवार सेन्दूर की गज मुक्तन रचहार ।
नखत पांत भई चहुँ दिशा टीका कनक लिलार ॥
अंजन श्याम नैन दोउ रेखा । ऊपर कंवल नाग लट देखा ॥
अधर दोउ मुख रात तंबोला । तेहिपर सोहल झोल हिंडोला ॥
कंचन पाट गूंदे सत दीपा । करनफूल चपला सम दीपा ॥
गर कंठमाल हार हिये डारी । बाजूबंद दोउ भुजा संवारी ॥
कंगन कलाई सोहे बाहीं । मोहे कंवल हथेरिन माहीं ॥
अंगुरिन पहिरी कनक अंगूठी । जगकर प्रान लये कर मूठी ॥
ऊपर बांह रोमावल आई । चाखी खंड अमृत कहँ धाई ॥
कारी लट छवि पट सोहे छुवत सो पायल पाउँ ।
कै अभरन धन विरहनी ठाढ़ भई तेहि ठाउँ ॥
सब अभरन विरहिन कर लीना । तब अर्दास दई ते कीना ॥
केहिविधि कंथ मिले करतारा । औगुन हेरके करै विचारा ॥
बहुधन सोच करै मनमाहीं । ठाढ़पिउ आनगही जबबाहीं ॥
सखिन कहा धन बिलंब न लाऊ । बिलंब किये रस रहे न भाऊ ॥
पिउ आयस कहँ बिलंब न कीजे । मांगे प्रान रहम कर दीजे ॥
सुनो सखी मैं बिलंब न करहूं । पिउ कहँ उतर देत मैं डरहूं ॥
आगे कागुन बूझे नाहां । का मैं कहब मही जो बाहां ॥
सखिन कहा तब विरहिनी डर हिरदे तब माइ ।
जबलो भेंट न रहस मन पीतम मीत गुसांइ ॥
चली सुनाए सुमिर पग धारा । चंद चतुर पिउ के सौनारा ॥
लचत लंक हंस गत गोरी । डारत जगपर मोहि ठगोरी ॥
सखी समूह निकट चहुंपासा । आई ससि लीने कैलासा ॥
आई चंद सुरज के पासा । बिहस सूरमन भयो हुलासा ॥

सूहि निकट चंद जो आई । चहुंदिशिसखी नखतछिटकाई ॥
देखि दोउ मन करें अंदेसा । यह सन्मुख की सपना देखा ॥
धन पिउ देखि हुलसि मनमाहां । ठाढ़ी भई सेजके पाहां ॥
बांह गही पीतम तबहिं नारि ओट पटकीन ।
जारी विरह अँगारकी उतर कंथका दीन ॥
केहिगुन रहो रहसके माहीं । तुमतन दया मया कछुनाहीं ॥
जिउ मारत नहिं करो विचारा । बलत फिरो सिगरो संसारा ॥
चाल के सोयीं मोहिं सुवायो । चलतबार नहिं मोहिंजगायो ॥
सपना कह्यो सो सपना कीनो । मोरनारिकी सुधिनहिं लीनो ॥
जब आपन मैं पंख पठावा । तब आई सुधि वह समुझावा ॥
मैं तुम प्रीति भयो जरखेहा । तुम मोहिं ते कब लायो नेहा ॥
जान परी पिउ प्रीति तुम्हारी । जेहि चाहौ तेहि मारो जारी ॥
गयो जो छांड़ अगार महँ देखि परायो नार ।
तुमहीं प्रेम लगाय के तब धन भइ जरछार ॥
सुन धन तोहिं भयो दुखगाढ़ा । मैंतो विछुरि कियोतन डाढ़ा ॥
तुमतो रहो बैठि घर माहां । मैंबनपड़यों अगम औगाहा ॥
दिन औ राति जरयों तो नेहा । रक्त मांस तन भा जरिखेहा ॥
छुट वह भोग और नहिं खायउँ । धन तो नेह गहे मैं आयउँ ॥
तज सुख भोग राज औ पाटा । भयोंभिखार चल्यों यहि बाटा ॥
जस दुख डाह सहत मैं आवा । कैसे कहूं न जाय सुनावा ॥
कांटन मांझ फूल तो बारी । बासन दिये लिये जिवमारी ॥
चल्यो जो भँवर पतंग हुइ गयो कांट मोहिंलाग ।
आयो जिवपर हेल के कँवल चार तो फाग ॥
सुनो नाथ तुम योगी भेखा । सीख्यो छन्द जगत बहुदेखा ॥

अब मोहिं सोच अधिक हियमाहीं। तुमयोगी रहियो थिरनाहीं॥
तब न रह्यो जो दुलह है आयो। अबकतरहो सहस रसलायो॥
योगी भँवर एक मत लीने। चाहैं फूल फूल रस भीने॥
योगी रहै जो प्रान उदासा। करें जहां तहँ सदा निवासा॥
भौंर न एक फूल पर रहई। योगियो एक ठांउ नहिं गहई॥
तिनते कठिन प्रीति को करै। आपन प्रान आग महँ धरै॥

योगी भँवर विदेश पुनि तिनकी का परतीत।
आवा-नित चित चाह बस करें न काहू प्रीत॥

सुन धन हत्यों जगतकर राजा। योगी भयोंलाग तोहिं काजा॥
देख्यों तोहिं जो कँवल अकेली। तज्यों राज औ कोट सहेली॥
भौंर जो सब फूलन रस लेई। पैजिउ एक फूल पर देई॥
योगी प्रान एक ते लावै। जगतफिरै नहिं प्रीति लगावै॥
तोरी प्रीति भिजै मो काया। रहे न और देह महँ छाया॥
सुमिरो-जनि वह दिनकर संगा। वह दिन हतो कुसुंभी रंगा॥
वह मंजीठ औंठ कर रांचा। छूट न जाय रंग यह सांचा॥

बस्तर महँ मंजीठ मिल जार विरह के रंग।
मिले जो उलटे एक हुइ जन्म न छांड़े संग॥

सुनो नाथ मो डर नहिं छूटा। जस तुम ब्याह विरह दे लूटा॥
अहूं सो बैठ निकट तुम पाहां। डरूं सो मोरन बिछड़ों नाहां॥
आज सो सगरी रैन जगाऊं। जागों संग पलक नहिं लाऊं॥
बैठ सेज सँग सतरंज खेलों। करो जो मात हाथ तब मेलों॥
मैं जो मात करों तुम लेऊं। दूजे ठाउँ जाय नहिं देऊं॥
तब तो हंस कहा बिहसाई। खेलो नार राखु चतुराई॥
मैं संसार जीत कर लीना। तोहिं शोच दाउँ अब कीना॥

ले आई सतरंज धन चतुराई के हाथ।
जो हारूं तो नाह की जो जीतों तो नाथ॥

ऊपर सेज बिसात बिछाई। खेलै लाग लिये चतुराई॥
आगे कीन पियादह पांती। पाछे सब महँ राजा भांती॥
प्रथमै नारि जो फरजी चली। आगे कीन पियादे बली॥
तब पिउ आपन फरजी खेला। आगे सूर पियादे पेला॥
फरजी चंद पोढ़ के लीना। तब सहपेल पियादे दीना॥
सौंहैं तहँा पियादे धावैं। बायें दहिने चोट चलावैं॥
फिरै न पाछे टरै न पाऊं। आगे चल-के जो जेहि ठाऊं॥

पहुंचे प्यादा तखत लो फिरै तो फरजी होय।
कौन सँभारे चार यो सरवर करै न कोय॥

तब सुल्तान तुरी उठ पेला। मंदिर अढ़ाई चाहे खेला॥
नारि जो आपन पील चलावा। कोनहिं कौन तेज घर आवा॥
तब रुख आपन कंथ उठावा। नारि सहूं चाहे सो लावा॥
रुख चारो दिश सोहीं धाये। होयसितून तेहि क्षार मिलाये॥
लखी नार पिउकी चतुराई। खेला आपन शाह उठाई॥
आठो दिशा शाहकर ठाऊं। तेहिके निकट दई को पाऊं॥
पिउ धन पहँ सह पेल लगावै। लिये बचाय सो हाथ न आवै॥

पुरुष चतुर चातुर तबहिं खेल न चूके कोय।
सह लागे पावै नहीं मात कहांते होय॥

खेलैं नारि पुरुष वे दोऊ। दोनों चतुर न चूके कोऊ॥
जब सब लीन पियादे मारी। रहे खेलमा मुहरा भारी॥
कहा नारि जीतों रुख लेऊं। मांगे कंथ फेर नहिं देऊं॥
कंथ कहा तुमते को मांगे। आप सम्हार देख सहलागे॥

तबलों कंथ तुरी उठधावा। आय नारिपर सहरुख लावा ॥
विहसी नारि देखि चतुराई। रुख दीना सह लीन छुड़ाई ॥
तबलों नारि खेल अस कीना। जबलों रुख पीतम करलीना ॥

फिर चूकी तब नारि अस कंथ खेल कछुकीन।
रुख सो तुरी दोउ नारिके सबै जीत कर लीन ॥

विहसा कंथ तुरी रुखगावा। देखो नारि मात अब आवा ॥
छिन यक खेल जो चूको कोई। परे दुःख पुनि हारै सोई ॥
कहो सो धन हारयो की नाहीं। अबके मात लेउँ गहिबाहीं ॥
कहेसि कंथ तुम चाटक मेलो। तुम जबहूं चतुराई खेलो ॥
तुम अपने मोहिं दरश लोभायो। मैं भूल्यों तुम औसर पायो ॥
रह्यों देखि मैं दर्शन ओरा। तो यह खेल भयो सब तोरा ॥
अहो कंथ तुम जीत जुवारी। लियो जीत तुम चाटक डारी ॥

लगे नैन दरशन तुम्हें मन लागो पिउ पीत।
तब जीत्यो मैं हारियो प्यो लीन्हों तुम जीत ॥

अबहीं मात होन कत चाहीं। मोरे पील औ फरजी आहीं ॥
देखो मात करो जेहि भांती। बुर्द होत बीती सब राती ॥
तबहिं हंस रुख फेर चलावा। आयनारि पर फिर सह लावा ॥
दे मह बीच आन पुनि दीन्हा। नारी ओट सो फरजी कीन्हा ॥
तब सुल्तान तुरी उठधावा। फरजी मार फेरि सह लावा ॥
राखा पील न मारे कोई। हार न माने बुर्द जो होई ॥
सह सह देत पाट पर कीन्हा। सहरुख लाय मात करदीन्हा ॥

मात भई धन विरहिनी विहसी खेल उठाइ।
धनभूली पिउ खेलमहँ गयेपिउ खेलभुलाइ ॥

कै पिउ मात लीन गहिबाहीं। कहो सो धन हारयोकी नाहीं ॥

बिहँसी नारि मैं दासि तुम्हारी। हारेउँ आउ आज का हारी॥
जीतो मोहिं चेरि कर लेहू। पै असफेर बिछोह न देहू॥
हुलसा कंथ लीन हियलाई। बिरहिन सेज कंथकी आई॥
मधुकर बिहँसि कंवल गरलागा। मिला सनेह बिरह दुखभागा॥
भंवरगहत अस कमल बिकासा। करन हुलास आय तब पासा॥
पंकज पात भंवर जिमि गीधा। कनक तार गज मुकता बेधा॥

मधुकर कमल सो पानपर रहस बास तैं फूल।
सो जाने अस प्रेमको जो पावै अस फूल॥

बिनवे तिय पिय पियो पियाला। अस नहिं पीउ होहु मतवाला॥
बहुत न पियो जो होय खुमारी। थोरो पिया संभार सम्हारी॥
कहै कंथ जो अहै मतवाला। कहा संभारै पीत पियाला॥
बीतन शोच करै जिउ केरा। आज जो अहै कालकिनहेरा॥
धन सो प्रान हाथ पिउदीना। कीरतकरि धन पिउ रस लीना॥
कर आगे पीतम रस पावै। कर आगे धन सखी जनावै॥
कर आगे पिउ पावै बासा। कर आगे धन पाउ हुलासा॥

कँवल कली योवन भरी पवन बास तहँ दीन।
सो मधुकर करलाग के सबै चहै रस लीन॥

धन पिउ संग भई मतवारी। भइअचेत पुनि नाहिं सम्हारी॥
भँवर जो शोक कँवल रसलीना। अभरन रंग भंग कर दीना॥
छिटकी मांग छिटक गे बारा। टूटा गजगज मुक्तन हारा॥
टीका मिलिभा ललित लिलारा। फीका भयो रंग रतनारा॥
टूक २ भइ कंचुकि चोली। पवन बास भइ कोकिल बोली॥
छुटिगये बंद जो छतियन साजे। खुल गये पायल पांयन बाजे॥
ठावहिं ठाउँ मसकि गा जोरा। जहं २ हाथ कंथ गहिबोरा॥

पौरस भानु सो चंद कर निकस गयो भिसार।
सेज फूल फुलवार पर चटक नखत सब हार॥
आई सखी चंद के तीरा। उठि विहान भन चेत शरीरा॥
कंथ की सेज जागनिश नारी। उठी उनींदी मस्त खुमारी॥
सखिन बेग गहि चेत कराई। अभरन कुंद लीन पहिराई॥
हिये चाप ले मंदिर सिधाई। कैसो साज पाट बैठाई॥
गई सखी माता के आगू। देखो बारी केर सुहागू॥
मातैं आन सो हिये लगावा। बार सुहाग सो कनक लुटावा॥
करमंजन स्नान जो कीन्हा। ओट सो मोर सजीवन दीन्हा॥
सूहा पहिरावा बहुरि अभरन रचा सो अंग।
निर्मल मानो चंद भई बरन न आउ सो रंग॥
दूलहन साज पाट बैठारी। आई निकट चीन की बारी॥
पूंछै बिहँस कहो सत गोई। पिय की सेज कौन रस होई॥
तुम सुकुमार फूल औ पानू। कैसे सेज रहो सँग भानू॥
सह्यो न हिये हार गरुआई। कैसे सह्यो कंथ बरिआई॥
कँवल बास रस बासी नारी। कहो कमल सब भेद उघारी॥
परीं सो खोज सखीं सब बारी। उठी उनींदी मात खुमारी॥
हमते करो न चोरी गोई। हम तो तोर मते सब कोई॥
तू सुकुमारी फूल अस पीउ तरुन बरियार।
रह्यो सो कैसे सेज पर सह्यो कंथ कर भार॥
सुनो सखी पिउ ऐस पियारा। लीन आप रस दीन अधारा॥
कासों कहूं पिय की चतुराई। चंदन बूंद रस लीन अघाई॥
पिउकर मर्म आज मैं पावा। पिउ बिन नेक न और सुहावा॥
पिउ की प्रीति प्रान उपराहीं। पिउ के बिना प्रान कछु नाहीं॥

प्रथमहि सेज चढ़त डर लागा। पुन सो बांह गहत भव भागा॥
जिउ योबन सब ताकर दीना। आपनकंथ सम्हार सो लीना॥
और भेद सो बान न आवै। सो जाने जो यह रस पावै॥

सब रस सेजैं कंथ पर पांउ धरत सुख होय।
पावाश्राजहिं मर्ममें जसपिउ और न कोय॥

भोर हंस बाहर उठि आवा। सेवक जगत आन शिरनावा॥
आलम शाह जो आवा पासा। कहा कि लेउ राज कैलासा॥
आपन राज चीन कर लीजै। हम सेवक सेवा चित दीजै॥
तुम सुल्तान रूमपति देवा। लेउ चीन औ माने सेवा॥
हंस कहा तुम पतिके ठाऊं। पिता सहूं कत बालक नाऊं॥
राजपाट तुमहीं सब छाजा। हम बालक सेवाके काजा॥
तुम्हरे राज भोग सुख खेली। पुनि आगेधौं किसदिन गेली॥

हमें राज सुख खेलमहँ तुमहिं राज जगकेर।
हमतो दास गुसाईं तो राज गुसाईं केर॥

लख फुलवारि जो भौंरहुलासा। बिकसी कली लगी यकपासा॥
जोड़ें आय सब फूल सहेलन। कँवल साथमें मालिन हेलन॥
कहें कि कँवल खेल असकीजै। भौंर लुभान जान नहिं दीजै॥
भँवर कँवल ले गई फुलवारी। लिये हुलास ठाढ़ सब नारी॥
सूरहिं घेर ठाढ़ भई नारी। आज खेल रन बीर सिंगारी॥
कहें सखिन रन जीतो सूरू। बीर सिंगार करोरन चूरू॥
हम हारैं तो अहैं तुम्हारी। तुम हारो तौ माल हमारी॥

जीतो बीर सिंगार तुम कँवल नार तब लेउ।
हारे खेत सिंगार के कहूं न तजि पग देउ॥

बिहँसि कहा खेलो अब नारी। काजीतो हारयो तो हारी॥

प्रथमहिं हारी चन्द तुम्हारी। तुम जो रहो अब रहो सँभारी॥
तानै धन पर गनै जो बाना। तीन राख सो कुश्त कमाना॥
ओढ़न ओट योबन जोसीला। सुनो बहिन सूरहि कोइपीला॥
नाशि खड्ग चक दांउ बतावैं। जाहिलूट फिर सहूं न आवैं॥
लटक मन्द तिल दांउ दिखावैं। पड़ेहाथ फिर जाय न पावैं॥
योबन तरी काम ब्रह्मण्डा। होय संग्राम जो बाजै खण्डा॥

साजो फिर संग्राम तुम चढ़ो खेत दे तूर।
अबतो माड़े सूररन होन चहत सब चूर॥

भौंर कँवल सब कली बिकासी। सब छूटेछिटकलीन बोलासी॥
पड़ी जूट जो लागे मारू। लड़ें जूझ रन बीर सिंगारू॥
धन सो ओट पट चोट चलावैं। होय जो हार हाथ तब आवैं॥
जो कोई दांउ सूरके आवैं। हार होय तेहि शीश उठावैं॥
भौंर की चोट योबनपर टारैं। घूंघट ओट आप हंस मारैं॥
यकदिशि चन्द लिये संगतारा। यकदिशि सूरअंग उजियारा॥
धाय सो सूर चन्द गहि लीना। एक कहैं सिगरे बश कीना॥

चन्द भई बश सूरके नखत हँसे सब संग।
सोई भोग बिलास अस जो दुख साधे अंग॥

हंस जो आन चीन सुख पावा। दुख भूला घर सुमिरन आवा॥
जो सुख छांड़ि लिये तप योगू। तेहि करतार दिये अस भोगू॥
चीनपती महँ कीन हुलासा। असमुखदीन न होयउदासा॥
सबकर ब्याह चीन महँ कीना। घर घर सुखीनार सुखदीना॥
जिन कैलास मँदिर सब पावा। अछरन संग सुखभोगमनावा॥
रही न अर्थ द्रव्यकी खांगा। साध रही पायो जस मांगा॥
गयो भुनाइ रूम के देशू। भई जु पुनि कैलास नरेशू॥

सेवा करें जो अप्सरा भोग विहँस सुख पास।
गये भूल जेहि दुख सबै मिला जबै कैलास॥

पूज आश मुक्ताहर केरी। देश बसा भई रैन उजेरी॥
शीश नाय विनये करतारा। तोहिं खेवट मोहिं पार उतारा॥
जेहि जेहि राख सो पूजा मानी। तेहि तेहि बेगि चढ़ावा आनी॥
हुलसी कँवल भँवर पिउ पाई। सुख फूली दुख गयो भुलाई॥
आवै जेहि मन्दिर महँ पीऊ। तनफूले मनबिहँसे जीऊ॥
आवैं सबै चीन की बारी। भौंरा गोहि रहे फुलवारी॥
दिन दिन भरे बरन सो भाऊ। ऋतु२ अधिक होनअनिचाऊ॥

जसजस बिहरत जगत सब हसहस बिहरैं रंग।
कंथ सो चितयो राग भा सखिन रागिनी संग॥

कातिक कांग शरदऋतु गाहां। प्रथम राग भा भैरों ताहां॥
सोहैं संग सखी सब लागन। कंथ सेज सुख सेज सुहागन॥
भैरों गुन गन सखिन सहेली। गुजरी रामकली रँग खेली॥
टोड़ी संग जान देवगिरी। बरनिनजाय सो धन धनाशिरी॥
बरसे चीत सुवाती मेहा। विरहिन आश पूज पिउनेहा॥
चातक सीप जो पाई स्वाती। शशि निर्मल पिउकी रँगराती॥
निशि दिनरहे हुलास मनमाहां। दृष्टि सहूं ना बिछुरे नाहां॥

कंथ राग भैरों तहां नारि भैरवी भोर।
सखी गूजरी और श्रीरामकली यकठौर॥

अगहन पूस हेमंतऋतु आवा। मालकोश होय कंथ दिखावा॥
नारि रैन जो पिउ संग जागी। ललितभई पुनि सोवनलागी॥
त्रिया ठाढ़ सो नारि जगावैं। सुहा पहिर धन कंथ बुलावैं॥
सखी सुवास बिलावल गोरी। ठाढ़ी सुमिरैं सूही टोरी॥

रैन सो सेखी सोहे धीरा। सुहा कंथ पिउभान उजीरा॥
उदय भानु उठि ललित सहेली। भोर भयो जिन सोउ अकेली॥
अगहन पूस हेमंतऋतु माहां। भयो घाम तज शीतल छाहां॥

नारिसखी सब रागिनी मालकोश संग पीउ।
अगहन पूसो सेज तहँ संगी आपन जीउ॥

माघ फागुन जो शिशिरकहंथा। लाग हिंडोल भयो जरि कंथा॥
गावैं बसंत सखी सब राती। ऋतु बसंत सब पिउसँग माती॥
पंचम माल रूर सूखन कली। देउ श्री मोहनी निर्मली॥
पिउ घर महँ सिगरो सुख पूग। गावैं बसंत बजावैं तूरा॥
निशि बासर नहिं जानहिं दूजा। रहस कूद मन पिउकी पूजा॥
चाचरखी जगत चहुँ प्यासा। भँवर मिला भई कमल बिकासा॥
योबन बैस फूल जो गोरी। मिला हिंडोल पिउ पंचम जोरी॥

ऋतु पंचम धन पंचमी पंचम राग हिंडोल।
रंग राचे चाचर ऐस खंजन करें किलोल॥

चैत बैशाख बसंतऋतु आवा। श्रीराग धन के मन भावा॥
देश कली सारंग जस बारी। प्रेम कली बस कंथ पियारी॥
नेह जान जस चाटक मेली। गौरी सांझ देत संग खेली॥
सारंग गौरी गत रंग सोनी। बरी हंस जेहि बाल सलोनी॥
बिकस कमलले शीतल बाता। पिउभा भँवर कली रँगराता॥
सहमो सोहे बसन सहेली। पड़ी केल पिउकी रस केली॥
फूली कँवल जवाहिर गोरी। रस उमँगी पिउ संग जोरी॥

श्रीराग रस बसंतऋतु भई भँवर के रंग।
धनहुलासकर उमँगिरमि मिलीकंथकेसंग॥

जेठ असाढ़ सो ग्रीषम राता। दीपक राग कंथ मन राता॥

नारि दीपके रूप मोहनी। बिभ्रम बिलास अहर कोषनी॥
मदन मोरका अधिक रसीले। देउगरी तेहि संग रँगीले॥
कंथ सूर दीपक शशि नारी। निकटसखिन साथी उजियारी॥
बिना तेल घर दीपक बरही। दीपक कंथ जहां पग धरही॥
उदय भानु जग जानो ताता। चंद मिले तब शीतल गाता॥
प्रथमे आंच जरे जो गोरी। मिला दीप भई दीप उजोरी॥

धन शीतल भई चंद्रमा कंथ भानु जगदीप।
रँगराती सखियां नखत बसे जो कंथसमीप॥

सावन भांदों पावस आवा। मेघ मलार सो कंथ दिखावा॥
बरसे मेघ औ बोले पीऊ। सखि हिंडोल झूलें रस जीऊ॥
चढ़े हिंडोल जो सोरठ गावैं। बिहँसै कौंध मेघ बरसावैं॥
गायक मोद अवनि घन कारा। सबै भंडार पूर जल सारा॥
लीन्ह अलाप मूंड़ शिर नारी। भीजै ठाढ़ मेह रतनारी॥
पिउ जल दीन्ह सीप भई नारी। हरियर भूमि कुसुम्भी सारी॥
पिउ सँग मिला बिरह गा छूटी। धन राती भई बीरबहूटी॥

ऋतु पावस पिउ मेघ रस धन मधुमादक मोद।
रस हुलास सरवर मनो सेज कंथ की गोद॥

बीते छउ ऋतु बारह मासा। धनपिउसंग जोकीन्हहुलासा॥
जस सुख भोग कमल घर पावा। बिधिने भाग सुभाग बनावा॥
नैहर मांझ मिला जो पीऊ। डर ससुराल रहा नहिं जीऊ॥
पिउ की सेज पिता घर राजू। महाभाग जेहिकर अस साजू॥
निशदिन भोग कंथ के पाहां। बैरी शोक न जाने काहां॥
हिये हुलास दरश सुख राता। बिरह लुआर न लागे गाता॥
बैठी कमल कंथ तहँ आवे। कोटि इन्द्र मन निरखि लुभावे॥

जाने सुधन रहब घर पिउ सँग नैहर माहँ।
ऐस न जाने एक दिन चले टेक गहि बाहँ॥
यक दिन हंस सोउ फुलवारी। कमल कमल कर करै बयारी॥
सोवत महँ सुपना अस देखा। रूम उजार सकल दुख लेखा॥
नगर कोट सब परा उजारी। बावर बेष पुरुष औ नारी॥
पुरुष सो सोच करैं सखूने। त्रिया जरन बिरह की भूने॥
मोती महल पोन अस देखा। कनकवार काई अवरेखा॥
माता बिरह अंध भई सोगू। शोक बियोग न सूझै लोगू॥
लख अस दशा आग तनलागी। गातन दाग बिरह उठ जागी॥
सोवत देखा स्वपन यक जाग परा अकुलाय।
भा उदास पंखी मनहु राज न चीन सुहाय॥
बैठ उदास जाय चौपारी। सब काँपे रँग रूप निहारी॥
परखन देखि सोच मन कीन्हा। आज उदास चहे का कीन्हा॥
ततखन अनवर शीश नवावा। जोर हाथ अर्दास सुनावा॥
अय सुल्तान भानु भिन्सारा। तोयभा सिद्ध सुफल उजियारा॥
मैं जेहि काज पान तव लीना। सो करतार रात मुख कीना॥
अब फिर पान यहां ते पाऊं। जाय रूम मुख रात दिखाऊं॥
आयो घर तज बालक भाई। मात पिता तज रहा न जाई॥
कह निकसो तुम गौन कह कहा मोर असगात।
मिले पान लागीं पथे युग युग रह सरछात॥
सुन यह बात आँसु भरि आवा। बिषमहँ आन अधिकबिषपावा॥
मैं कब रहन चीन का आवा। जो तुम मोकहँ छाँड़ सिधावा॥
माँगे आज बिदा जो पाऊं। लगूं पंथ उठ भोर सिधाऊं॥
कह यह बचन गयो कैलासा। आई कँवल कंथ के पासा॥

भँवर उदास कमल जब देखा। गई झुराइ जो मर्म बिशेखा॥
आज उदास अहै पिउ काहा। जानब कहो देश की चाहा॥
पिउ उदास धन जात झुरानी। देहौं कंथ बिहँस रस पानी॥

के कछु खोर हमार लग के मन सुमिरयो देश।
नारि निछावर जानिहू जो पिउ कियो अँदेश॥

धन उदास मैं यह उपदेशा। मातहि तज आयो परदेशा॥
सो स्वपने मैं देखो आजू। संकट परा उजर गा राजू॥
दूजे संग चले जो आये। रह न सकूं मैं देश पराये॥
आजकाल मैं चहूं सिधारा। तुमसो चीन का करो सम्हारा॥
सुन सो बचन कठिन शशि कही। होय गँभीर जानो ठग रही॥
सुनत सखी रोय उठ धाई। बिनवै लगीं चरण लपटाई॥
ब्याकुल होय धाइ सबनारी। भई बिन प्रान करें मनुहारी॥

सूरउदास सो गौन कह कँवला संकट कीन।
अमृतबास हुलास महँ जानु घोर बिषदीन॥

मुक्काहर सुन भई दुत गाता। बिन जिउ छाँड़ न आवै बाता॥
हम तुम लाय टेक मन आशा। तुम कत करो सो आश निराशा॥
तुम मो दीप जोत घर बारा। तुम बिन कौन करै उजियारा॥
जिन बोहत गुण काट बहायो। राज करो हम पार लगायो॥
ततखन सुन आयो सुलताना। मन बियोग तनशोक समाना॥
केहि गुन हंस सो भयो उदासा। छांड़ो यह किसपर कैलासा॥
चीन का राज कहो केहि देहू। जो तुम नाउ गौन कर लेहू॥

हम खेवक तुम जानके टेकी आश तुम्हार।
चलो छांड़ गुन काट के पड़े नाउ मँझधार॥

उठा हंस बिनवै कर जोरी। कह्यों न हारगात का मोरी॥

कह्योंहार सों धर्म तुम्हारा। तुम कर्तार कीन्ह उजियारा॥
मैं केहि योग जो करूं बखाना। तुम सो गुसाईं जगत प्रधाना॥
सहसन जीभ जगत गुन गावैं। एको कीर्ति पार नहिं पावैं॥
हतों हीन तुम कीन्ह कुलीना। हतों रङ्क तुम क्षितिपति कीना॥
हतों पोत तुम कीन्हो मोती। हत्यों मलीन दीन तुम जोती॥
हत्यों निराश सो पूजे आशा। हतों कुवास सो दीन सुवासा॥

हतों अश्वपति दीनमैं तुम गरूर मोहिं कीन्ह।
कहँलौं अस्तुति गाइहौं जैस रतन तुम दीन्ह॥

अब सो बिनय करूं कर जोरी। सुनिये बात गुसांईं मोरी॥
जिन मोहिंपाल जन्म असदीना। मैं वह की कुछ दास न कीना॥
बारी बैस देश मो छूटा। बैरिन राज पाट मो लूटा॥
माता ले आई परदेशा। मैं तेहि छाँड़ कियो यह बेशा॥
सो मैं तेहि सपने महँ देखा। अन्ध हिये जस बावर लेखा॥
दूजे भये सब सखा उदासा। मैं सो अकेल रहों केहि पासा॥
सो मैं जाउँ जो आज्ञा पाऊं। मातहि ले फिर देश सिधाऊं॥

अहै मोहिं जाना अवशि देश पिता के ठाउँ।
जबलौं प्रान सो कंठ मा एकबार तहँ जाउँ॥

मंत्रिन कहा सुनो सुलताना। यह सपने जो बनक समाना॥
राखो दिये हृदय महँ ठाऊँ। रहै न पै जेहि सपने नाऊँ॥
कोटि भोग इन देहु हुलासा। रहै न जिन चित होइ उदासा॥
राखो जो तहँ कोट बराई। जान बेल बिन पान भुराई॥
अब सो पान मयाकर दीजै। आज्ञा गौनबार की कीजै॥
औ अपने मन करो बिचारा। बंश न होय जो बंश परारा॥
तब सुलतान बूझ मन थाका। कुछफल नाहिंजोगहिकराखा॥

आज्ञा कीनी गौनकी करो साज तेहि योग ।
जेहिमा दोष न लगे कछु भला कहें सबलोग ॥
सुनि धन गौन चाल पिउकेरा । गइ तनसूख कालमनुघेरा ॥
दहक उठी घबड़ा अकुलानी । मातपिता तजि भयोबिगानी ॥
उमड़े नैन नीर भरि आये । आज चलिउँ मैं देश पराये ॥
मैं यह मरम आदिते जाना । इक दिन कंथ न रहे निदाना ॥
आज बिछोह दई सो डारा । छांड़ चलिउँ नैहर कुलसारा ॥
छांड़्यों मात पिता औभाई । को राखै जब भइउँ पराई ॥
काहेक नारि जन्म बिधिदीन्हा । जो असआन बिछोहाकीन्हा ॥
समँद हिये उलथा सबहिं राखे रहे न आंस ।
कुल बियोगते रोवहीं लखि नैहर रनिवास ॥
सोग भये नहिं समझे बारी । भेंटे का आईं सब नारी ॥
मिलीं आय नैहर की गोई । भोर सो भेंट कहां ते होई ॥
जस इक संग कीन रस केली । तजितस चलिउँ बिदेश अकेली ॥
मात पिता मोहिं कीन्ह नियारी । दीन हाथ गहि देश निकारी ॥
नहिं पिउ रहे न राखे कोई । चलन चलन भाषैं सब कोई ॥
नैहर मरम जानि हम पावा । तबहिं बटोही देश परावा ॥
किये सब जन्म चारि औतारा । जिन अस बालबिछोहा डारा ॥
साजन संग सिधारहूं मिलो भेंट सब कोय ।
हूं निर्गुण गुन तोड़ अस समझ ज्ञानअसमोय ॥
रोवत धन रोवत सब कोई । इक दिन चलन सबनका होई ॥
कौन सोग मनकरो दुलारी । तुमजो चलो हम चालनहारी ॥
तुम नारह्यो निठुर के माहां । पुनि हम काह धूप की छाहां ॥
देखो हिय नैहर निठुराई । को राखै जब कंथ चलाई ॥

पाहुन सब नैहर मा बारी। सपने खेल लेहु दिन चारी॥
जो न बिछोह करत करतारा। तौ कस देत बारि औतारा॥
आदि पिता मैं ऐसा जाना। का दुख लाय खाय यक दाना॥

भयो बिछोहसो ताहि दिन जेहि दिनभा औतार।
अब जो कंथ चलावई को गहि राखनहार॥

तुम गुनवंत सबै गुन भई। औ कुलवंत कीन मनदई॥
चल्यो जो तुम पीतमके साथा। रह्यो लिये आयसु नितहाथा॥
निशिदिन पिउ सेवा चितदीनो। आयसु मेट और ना कीनो॥
पिय सेवा सो पीतम प्यारी। दुइ जग सोई सुहागिन नारी॥
बर पीपर बरकेह जो ईशा। भइ पुरखीन उदयकी शीशा॥
दियो बताय पंथ तेहि ओरा। भये फिरढीउ जो शीश निहोरा॥
तौ नैहर का शोच न आवै। जो ससुरार जाय सुख पावै॥

धन गुन सीखे नैहरे सुख पावै ससुरार।
पियआयसुबश नारि जो दुइजगसोउजियार॥

भई समय सुन गौनकी चारा। पंडित पुनि आये सब बारा॥
आज्ञा भई बेद निरमाहूं। सुफलघड़ी गुन गौन चलाहूं॥
देउ बताय पंथ तेहि ओरा। जेहिदिशि जाय नेह दिलचोरा॥
तब आये तो बेष भिखारी। अब संग भार लाज भयो भारी॥
बहसो पंथ चढ़ाइ अब दीजै। पूरब दिशि गुन मारग लीजै॥
मांझ समंदचले पिउ जाहीं। उतेर जाय देश के माहीं॥
तेहि दिशि परैं न कोउ पहारा। समंद सों दैव लगाई पारा॥

साधो घड़ी सो सुफल दिन जो दिनसहूं न होय।
जेहिमा कुशलो क्षेम तें जाय पंथ सब कोय॥

देखैं पंडित बेद बिचारी। आदित शूकपछिमदिशिभारी॥

मंगल बुध उतर दिशि गाढ़ा। समहूं काल कटक लिये ठाढ़ा॥
सोम शनीचर पूरब हीना। बेफै दखन सो औगुन चीना॥
जोरे उताहिल चहे सिधावै। औषध खाय लिये सुख पावै॥
बुध दधि औ बेफै गुड़ मीठा। रवि ताम्बूल खाय सुख दीठा॥
राई खाय शूक पग धारै। दर्पण देख सो सोम सिधारै॥
वाय बिडंग शनीचर मूरी। मंगल धनियां खा दुखदूरी॥

देश देश के ओषधी सो कहि दीन बताय।
योगिनि चक्र बतावहूं जोनित चक्र कराय॥

सत्ताइस उन्निस बारह चारी। योगिनि पश्चिमचलोबिचारी॥
इक नौ सोरह चौबिस माहीं। पूरब दखिन कोन बिचमाहीं॥
छब्बिस अठारह ग्यारह तीन। योगिनि देखे बांव प्रवीन॥
दुइ पचीस सत्रह दस होई। दखिन पछिमबिचजानो सोई॥
चौदह सात उनीस औ बाइस। योगिनि पूरबसहुँ जिनजाइस॥
पन्द्रह तीस आठ बत्तीसा। योगिनि उतर सहूं महँ दीसा॥
बीस पांच औ तेरह जानो। योगिनिबायव महँ पहिचानो॥

अट्ठाइस छैइकईस पुनि उतर पूर्व बिच जाहँ।
ऐस बिचार जो चलौकोउ जीतफिरे जगमाहँ॥

मेष सिंह धन पूरब शशी। सुता मकर वृष दक्खिन लसी॥
तुला मिथुन घट पश्चिममें बस। कर्क मीन वृश्चिक उत्तर बस॥
धनो मकर सांकर दुख लिये। देखे पाप जो पाछे दिये॥
चलै बिदेश औ गिरह बनावै। समहूँ चांद महासुख पावै॥
उत्तरकाल अदित कहँ रहै। सोमकाल बायब फल कहै॥
पश्चिम निरतकाल भवमाहीं। दक्खिन अग्नि शुक्रगुरुताहीं॥
सोम काल पूरब मा रहै। कालपीठ दे चल सुखलहै॥

छीजै निर्मल चन्द्रमा हुये बली औतार।
ऐसे दिन लक्षण कहे धनी करे कर्तार॥

पूरब चन्द जो पहिले रहिये। सहूँ औतार दखिनकहँ रहिये॥
उत्तर बीचे बायब रमी। पश्चिम बीचे अगनी बमी॥
नैऋत सातै दक्खिन आई। आठे अगिन बसे गतगाई॥
चन्दा प्रथमैं नवयें रहै। बम अकाश दशयें गतगहै॥
परवे चंद जो आगे जाई। ते गुनिकहूँ जसदिवसबिनाई॥
कहूं मुहूरत अम पुनि भली। भल मिरगा दहिने मगमिली॥
मघा पुष्य जेष्ठा अनुराधा। करे जो काज होय नहिंबाधा॥

द्वितिया पन्थी परे नहिं सब सावित्री योग।
सबितावुध दुखसभय महँ तज्यो देख सुखभोग॥

भइ सब साज गौन जब साजै। गे दिन मास घड़ी वह बाजै॥
कंथ उताहल भा असवारा। आय बिमान लाग दरबारा॥
भेंट सखी नैहर की बारी। नैहर छांड़ चली ससुरारी॥
रोवै मात पिता औ नारी। करमींजे बिछुरे हित प्यारी॥
जेहि दिन कंथ डरो मनमाहां। सो दिन लाग चलावै ताहां॥
हितू मीत रोवैं सब ठाढ़े। कोउ न रखै जब पीतमकाढ़े॥
ठावैं ठाउँ भयो सब सूना। घर औ बार भंडार बिहूना॥

अपना कहते रह्यो तहँ रहा न अपने हाथ।
गुन औगुन नैहरेका चला अन्त सो साथ॥

चढ़े बिमान औ लाग कहारा। चला कंथले संग सिधारा॥
मन्दिर भंडार तहीं सब थाका। जोजाकर सोतेहिपुनिताका॥
गुन औगुन सो संग सिधारा। यशअपयश रहिगा संसारा॥
हितू पियार बार लों आये। रोय फिरे नहिं संग सिधाये॥

चले लोग पहुँचावै बाटा। जहां बीच पथ सागर घाटा॥
पंथ चलाय फिरी सब भीरा। शत्रु मित्र सब होगये धीरा॥
तब धन बूझि मर्म मन रोई। छुट पिउ आपन और न कोई॥

निकसी सीप समुद्र तें रतनजोत भई जीउ।
धोंकस लेई जौहरी रतन परेखा पीउ॥

निकसी साज गौन सब साजा। को अस देइ जगत कर राजा॥
डोलिया संग जो चलीं सहेली। जो संग जन्मी औ सँगखेली॥
जहँलों साज दीन्ह सुलताना। ना गिन जाय न जायबखाना॥
गज मुक्तन की भरी पिटारी। हीरा लाल सहस नगभारी॥
यकयकनगज्यहिमोल न लाहा। कोटिन दीन कहा त्यहिकाहा॥
हस्ती बहुत अनेक कहारा। पुरुष बहुत सँगदीन्ह जुझारा॥
कंचन दानदेन का चला। भा जो पुरुष सिद्ध निर्मला॥

बेग गौन दल साजके भौनगये सब भाट।
पहुँचा जाय समुद्र पर ऐस गौन दल ठाट॥

ख्वाजे खिजर देखि वह माहां। आये मन परखे चलि ताहां॥
देखों है वह द्रव्य लुभाना। कै मुख रचित देय जगदाना॥
बेष भिखारी केहिपर लीन्हा। मांगा दान देउ सुधि कीन्हा॥
दान दियो नहिं होहु उबारा। दान बिना बूड़ो मंझधारा॥
दान सुपत ऊपर पति होई। दान शुद्ध पावै सब कोई॥
दान देत दोऊ जग केरा। जिन दीना तिन कीन उजेरा॥
मोक्षहु दान द्रव्यने पावै। दियो दान बिधि पारलगावै॥

दान निकारत द्रव्यते छपन समंद भा पार।
नहिंतो दिशा तोरंज की होई तो मंझधार॥

हंस कहा तपसी सुन बाता। द्रव्य ऊंच जग कीन्ह बिधाता॥

जेहि ते द्रव्य पुरुषबड़ सोई। द्रव्य बिना पूंछै नहिं कोई॥
द्रव्य ते काज करे जो भावै। द्रव्यते सब जग शीश नवावै॥
मैं तो ख्वाजे खिजर का चेला। ताहि भरोस चहूं मैं खेला।
जो सिख आदि गुरू मोहिं दीना। तेहि छुट आनचहूं ना कीना॥
चालिस अंशमहँ एक निकारो। देउ दान तो पार सिधारो॥
एक दिये जो दश गुन पावै। ऐसबनिज कर्तार करावै॥

चालिश अंश बिचारके एक दीन्ह तेहि दान।
बोहित साज सँवार के चला खेइ यश यान॥

चला खेइ जो बोहित डारा। देखे लाग समँद की धारा॥
बोहित सहस जो बोझ चलाये। पुरुष सबै तापर बैठाये॥
दीरघ बोहित एक सम्हारा। तापर चन्द चला लै तारा॥
सूर के संग करै रस केली। कांपे जल थल देखि सहेली॥
उठै लहर ज्यों परलै आवै। बोहित स्वर्ग जाय भूआवै॥
मगर मच्छ कोटिन उलथाहीं। तिरिया देखि देखि डर खाहीं॥
समँद अगूझ न सूझै पारा। सूझै स्वर्ग कि जल हल सारा॥

बोहित पूर्रादर वत परी समंदर माहिं।
खेवनहार अधरम भा बूड़ेऔ उतराहिं॥

यहि विधि ते बासक जो धावै। समहुन घाट केहू के आवै॥
तबलों दूत सो योगिन केरा। बोहित देख कीन्ह तहँफेरा॥
योगिन ते उन कहा सँदेशा। चली जवाहिर रूम के देशा॥
शशि ऊपर देखो वह जोती। दूसर कहाँ होय पुनि ओती॥
अवधि पीउ भान उपराहीं। जगत भान सो वह परछाहीं॥
देख्यो चंद सुरज इक साथा। आयो आंड़ भान वह हाथा॥
सो वह जात समंदर माहीं। लेउ सो लेउ बहुरि सो नाहीं॥

बहुरि कहां वह पाइयो जाय उतर वह देश।
मोहिं दोष जिन लाइयो मैं कहि दीन संदेश॥

सुनि देवरहु उठा तव रोई। योगी साधन पायो सोई।
सुन योगी दुरजन बट पारा। खोयो मोहिं डार मँझ धारा॥
जेहि कारन मैं रहो भिखारी। सोन मिली इगयों तन डारी॥
सेवा तोर प्रान मैं दीना। तोहि पाहनमोहिंपार नकीना॥
सेमर सेय सुवा जस रोवा। तसमैं तोहि सेय जिव खोवा॥
अबसो मिलन आश भइ दूरी। का मोहिंजिये खाउँ विषमूरी॥
अबकत जाउँ जरूं तोवारा। हत्या तोहिं जो हंस बट पारा॥

बाहँ टेक बैठाइये कहीं न लाये पार।
तोका जान उठाइये बोझ मोर अतिभार॥

नाथ कहा सुन योग अयाने। काचे योग सोका अकुलाने॥
काचे धान पड़े जो बूटी। कनकन होय जाय घरफूटी॥
धातु कमाय न मारे पारा। खोदे आंचलाय हरतारा॥
मरे हरतार जो कंचन होई। नहीं तोजाय जो जड़ खोई॥
जबलों विपति होय नहिं ताता। तबलों होय न कंचन राता॥
चेला प्रथम योग तन जारे। तौ गुरु परखि कै बूटी डारे॥
तोहिं हम अबहिं योग महँकांचा। जबलों जाय देखै रंग सांचा॥

जरै अहे गुरु हाथ महँ खड़े कांच पै तोरि।
सहे आंच चेला नहीं देवै गुरु कस खोरि॥

अबथिर हो गिरआसन मारी। देउँ मँगाय तोहिं वह नारी॥
बीर नाथ तब सुमिरन कीना। बीर बुलाय मोपूजा दीना॥
आज्ञा कीन समंद महँ धावे। जात जवाहिरका ले आवे॥
सुनत बीर होय पवन उड़ाने। जाय समंद ऊपर मड़राने॥

देखिन चन्द्र समंदर माहीं। सूर संग बिछुरे सो नाहीं॥
दिनमहि खेल करे पिउ संगा। रैन सेज बिछुरे नहिं अंगा॥
नहिं बिछुरे नहिं उलटे थाहीं। नहीं सो देवें संग दुराहीं॥
रहो पार वही आश लग प्यादे बरन बोलाय।
नहिं बिछुरे पीतमहिं ते ना गहिलेय उठाय॥
इक निशा आनपरी अँधियारी। सोवत सेज पुरुष औ नारी॥
तपन भई पुनि अंग पसीजा। चोलाचीर दोउ कर भीजा॥
उठा हंस सोवत अकुलाई। सोवत दूसर सेज बिछाई॥
तब दूतिन उठ औसर पावा। धन सोवत गहिपाट उठावा॥
लीन उठाय सो सोवत नारी। कीन्ह सूरते चंद उजारी॥
पल मारत लेआई ताहां। योगी साज जपे पुनि जाहां॥
चहुँदिशि बैठे योग भिखारी। मांझ सिंहासन दीन उतारी॥
सिंहासन नखते जटित शशि सोवत तेहिमाहँ।
जगमगाय पिउ सुमिरयत लोक जोतजेहिपाहँ॥
पलगा परत खरक भई नारी। उठ अचेत जिनबार सम्हारी॥
खोले नैन मिरग अस लोने। चख उनींद चितवै चहुँकोने॥
नहिं पिउ संग न संग सहेली। कांप उठीकत पड़यों अकेली॥
नहिं बोहित तेहि समंद अपारा। नहिं खेवट नहिं खेवनहारा॥
ठाढ़ भई जो शीश उघारी। चंदवदन गर मुक्ता भारी॥
चमकी जोत चौंक अस लागी। दामिनि देखि कँपे बैरागी॥
मुरछि परे चहुँ ओर भिखारी। देखत सूखगई वह नारी॥
लखा भिखारि शशि मेरुपर कुहक पुकारउ नाहँ।
लग सहाय पीतम अभी राखो गहि मो बाहँ॥
रोवन लाग हेर चहुँ ओरा। को अब धरम निबाहे मोरा॥

मइ विन ज्ञान प्रान तजिहाथा। कतहै कंथ जाउँ केहि साथा ॥
मोतिन मांग लाग छिटकावै। चंद्रवदन पर क्षार चलावै ॥
कर अपघात खसोटे बारा। मुक्तन लर सब फेंक पहारा ॥
खाय पछार गई लड़ लूटी। पायल छूट कलाई फूटी ॥
होगइ श्याम श्याम पुनि नारी। कंचन मुरति पलँग पर डारी ॥
लागो गहन पड़े शशि गाढ़ी। पिउ पिउ रटत पुकारत ठाढ़ी ॥

पड़ी मीन जल बाहरे टूक टूक भा जीउ।
हारी नारि पुकार के लागि गुहार न पीउ ॥

देखे निकट न आवै भानू। मांगे लाग दई ते दानू ॥
पे कर्तार जगतपति सेवा। तोहिं पतिराखु तार मो खेवा ॥
कंथ बिछोह पड़्यों बन माहीं। तोहिंबिनआज कोऊ मो नाहीं ॥
हौं बिन ज्ञान अहौं शठ बौरी। तोयँ सत राखु सहायकर मोरी ॥
बैरी गोर गहै नहिं बाहां। वेग सम्हार गाढ़ दुख माहां ॥
कैकर मया मिलै मोहिं पीऊ। कै कर काल लिये मग जीऊ ॥
इहिविधि रोई गगन पसीजा। आंसुन भूमि मेरु सब भीजा ॥

धन अधीर रोवत निरख परसन भा करतार।
तबलौं जीत भिखार शठ सबै उठे बटपार ॥

रहा न दृढ़ मन केहू केरा। जिन जिन रूप सहूं है हेरा ॥
कंठी माल यतिन की टूटी। देखत जोत जाप गइ छूटी ॥
छूटि समाधि श्वास जो बांधे। खुलगा कंठ मौन जिनसाधे ॥
फिर गइ दृष्टि जोति आकासी। निकस भीर सेवरा संन्यासी ॥
ऊर्ध्वबाहु तहँ हाथ पसारा। मानुष दण्डी देह सँभारा ॥
सब मिल आप आप को धाये। रह्यो न ज्ञान ध्यानललिताये ॥
औ देवरहु हुलस के धावा। जे दुख दीन ताहि मैं पावा ॥

धाय भिखारी चहुँ दिशा लीन घेर चहुँकोट।
तबलौं आप निरंजना कीन्ह हाथकी ओट॥

योग छांड़ जिन तिरिया हेरा। बैरी भयो बिधाता केरा॥
देखा दुष्ट जो फेर बिधाता। मानुष भे सब पाहन गाता॥
जस छल साज हरी पर नारी। तस जर भये सो क्षार भिखारी॥
बरन पषाण भये सब ठाढ़े। विश्वकर्मा जो गढ़ गढ़ काढ़े॥
हरगइ दृष्टि रूप औ बोला। कर औ चरन जाय नहिं डोला॥
कब भा शशिको रूप मुख धोई। छलसे सुखपावै कत कोई॥
रहगइ सत्य टेक सत सांची। सतकह पाप कालते बांची॥

छल करिके केहि पावसुख सत्यकहे केहि दुःख।
छिनहि आग लागी प्रकट कहां आगमहँ सुःख॥

भे पषाण मूरति सब कोई। होइ अकेल पड़े तब रोई॥
देखा बन औ खण्ड पहाड़ा। कहां पड़यो तजि इन्द्रअखाड़ा॥
भे अकेल बन महँ बनबासी। बावर भई बिन पंख उदासी॥
चढ़ सुमेरु चारों दिशि हेरा। चातक भई सो पिउ पिउ टेरा॥
हीरा भई लाल तज नारी। की कैलास काढ़ बनडारी॥
मांझ बिदेश बिछुरगई जोरी। सारस बरन पुकारै गोरी॥
जनुबिननीरकमलकुम्हिलानी। सूखा जल हेरै बौरानी॥

नहिं ससुरार न नैहरो ना सँग सखी न पीउ।
परी मँझधार अपार महँ को राखै मो जीउ॥

परी मँझधार नारि तब रोई। कहँ लागे मम कंथ बिछोई॥
कत गहि बाहँ ले आये नाहां। कत मोहिं छांड़दीन गहिबाहां॥
कस गुन काढ़ दीन मँझधारा। कस गहि बाहँ न लायो पारा॥
अब कित जाय कहा मैं टेरूं। हूं बावर केहि दिशि मगहेरूं॥

नहिं ससुरारि न नैहर देशू। नहिं कोइ मीत जो कहेसँदेशू॥
कंथ मोर कैसे सुधि पाई। को पिउ ते मो चाह सुनाई॥
मात पिता जाने पिउ साथा। हूं सो परी परारे हाथा॥
हूँ नारी बुधिहीन अति पंथ बिदेशी नारि।
पड़्यों अकेल बिदेश महँ को मम लगे गुहारि॥
रोवन लाग अगम दुख बूझी। मारग पाउँ परै नहिं सूझी॥
टूटे आंसु रक्त भा लूकी। कुहके नारि दई बनफूंकी॥
धन रोवत गा दरक पहारू। सुनत कूक भा जगत भँभारू॥
होयगा मोर बिरह कर दाऊं। तपै लाग कोउ जाय न ठाऊं॥
पंखिन जान धरा बन आगी। लागे जरै प्रान ते भागी॥
मेघै आन चुआवा नीरा। धूम लाग भा श्याम शरीरा॥
शीतल करै पवन जो आवा। लागा लोक बयारू धावा॥
बृक्षकरें जो छाहँ तहँ पात जरैं तेहि आंच।
आंच लगी जल मांझ सोइ और जगतकोबांच॥
धन बियोग सोग जग बोवा। धरती स्वर्ग जरा दुखरोवा॥
खुला जो देख समंद पहारा। रोवन लाग जगत संसारा॥
ठांउहि ठांउ भूमि जो रोई। सोत सोत निकसी जल सोई॥
रोवा गिरि झरना भये आंसू। रोवैं बनपक्षी बनबासू॥
अहि रोवत गये पैठि पतारा। टपके आंस कूप जलधारा॥
रोवैं बृक्ष झरैं पुनि पाती। रोवैं नखत तराई राती॥
रोवत चन्द भयो हिय कारा। रोवैं मच्छ समंद भयो खारा॥
मेघ सो रोवैं ताहि दुख भूमि चुवावैं आंस।
जगजाने बरषा भई लागो भादों मास॥
इहि बिधि तबहिं नारि बन रोई। हार पुकार न धावा कोई॥

तहँ आवैं योगिन की दासी। भई आइ सो कालकी फांसी॥
लीने फूल पान भरथारा। देखा दुःखित ठाढ़ पहारा॥
पाहन मूर्ति ठाढ़ सब योगी। रोयउठे तेहिं देखि बियोगी॥
को तपसी परबत पर आवा। जिन तपसिन पर बानचलावा॥
तबलों दृष्टि परी वह नारी। डार गहे ठाढ़ी मतवारी॥
दीप स्वरूप पदमकर बामा। भँवर पतंग फिरैं चहुँ पासा॥

रक्त आंसु ज्यों टूटे मानो मानिक हार।
ठाउँ ठाउँ झर झर परें उपजे रतन अंगार॥

देखत नारि गई मुरझाई। केहि शशि तोहिं समंदबहाई॥
काची कली अहै शउ भोरी। किन हत्यार लीन हरजोरी॥
कीधौं इन्द्रलोक ते आई। की कैलास ते दई पठाई॥
है सत भरी प्रेम की डाढ़ी। तपसी जार आप रही ठाढ़ी॥
टेकिस चरन आय तब आगू। पूंछे लाग बिरह बैरागू॥
केहिकी अहो बारि धनगोरी। केहिकी अहो पदारथ जोरी॥
को पीतम जेहि कंठ पियारी। कै तोहिं आन मेरु परडारी॥

किन तोहिं कीन बिछोह दुख की काहू हरलीन।
कहो प्रान दुख अपनजस को तुमका दुख दीन॥

उतर देतखन छूट डफारा। नैन रक्तभये परलो धारा॥
पिउ मो प्रान मैं ताकर जीऊ। केहि बिधि मोहिं बिछोहापीऊ॥
योगिन मोरे संग छल कीना। कंथ बिछोह मोहिं हरलीना॥
हत्यों चीनपती की जाई। रूमपती पुनि ब्याह चलाई॥
बीचै यह योगी बटपारा। मोहिं उठाय मेरु पर डारा॥
केहिदिशि जाउँ जोपरयोंअकेली। नहिं मो पंथ न पाउँ सहेली॥
दे बिष आन खाइ मरजाऊं। दुख जरजाय प्रान ले जाऊं॥

कौन उपाय सो करूं मैं परी सो कठिन कठोर।
दे बिष खाइ जो मरूं मैं धर्म संग सब तोर॥

सुन बैराग जरी तब चेरी। हुइगई भस्म बिरह की ढेरी॥
रोवै आपै वह समझावै। जो बिष देइ जो आप नशावै॥
जरगे वे पापी बटपारा। जिनतोहिंकमलआगमहँडारा॥
तोहिं हंसरूप जगत उपराहीं। देखै पुरुष गहै तब बाहीं॥
बैठा मंडफ जो लखै न कोई। दुख ऊपर दूना दुख होई॥
हूं तो दुखी गयो दुख पागी। अब संग जरूं चरन तो लागी॥
भंवर बैठ जो मंडफ माहां। जौलों आन मिलै तो नाहां॥

होहु निराश न मनहिं तुम पिउ आये तुम पास।
हो तुम कँवल सो ताहि कर जिये कैस बनबास॥

रोवत बहि परलो की धारा। बहा जगत औ बूड़ पहारा॥
हारीं वह समझावत चेरी। रहै न आंस कहै बहुतेरी॥
तब गहिबाहँ लीन हिय लाई। ले भीतर मंडफ बैठाई॥
दिया नीर नहिं पियै पियासी। बैठ जरी बिनवै पुनि दासी॥
वह बाहर वह भीतर रोवै। निशिदिन कंथ पंथ कर जोवै॥
घर औ बार भूल गई दासी। फंद परी उरझी गरफांसी॥
गासुख भूल जो दिनदश कीना। दुखभा भोग जो पीतम दीना॥

कासम जरत अंगार महँ मरत निपट दुखहोय।
जब दुखहोय बिछोहते बिधि बिछुरे जिनकोय॥

जागा भँवर भयो जो भोरा। देखै कमल गई केहि ओरा॥
नहिं सो सेज न सोवनहारे। कै अस आग समंद महँ डारे॥
चहुँदिशि हेर सो रोवन लागा। कत मैं सोइ खोइ अब जागा॥
टूटे आंस माल जनु छूटा। रोवै ठाढ़ भूल कर लूटा॥

चकित चितै देखै चहुँ ओरा। कांझ समंद गई केहि ओरा॥
बावर भा जानो बिप खाई। लैली गई मजनू बौराई॥
गई नारि जल डार अंगारा। बोहित जरैलाग मँझधारा॥

ठाढ़रहो गहवर मनहुँ चक चितवे चहुँओर।
वार पार सूझै नहीं खोज करूं केहि ठौर॥

तस घर माहँ मो शब्द जगाई। उठवैठी मनकी बौराई॥
कर मींजे कैं अनरथ कीना। किन बटपार चंद हर लीना॥
रोवन लाग हाथ शिर मारी। जाग परीं सोवत सब नारी॥
भयो अँडोर समंद मँझधारा। चंद हरा जगभा अँधियारा॥
हुइगई सब बावर अस नारी। करें न बिलँब होय बलिहारी॥
कोई धाय समंद महँ परी। कोइ तो आग शीश पगधरी॥
कोइ तो खड्ग लाग जिउ देई। कोइ तो आह करे मुइँ लेई॥

कोई जमधर मारही कोई भुइँ खाय पछार।
कोउ काहू संभार नहिं भा परलै मँझधार॥

सुन अँडोर सब बोहित धाये। साथी सबै हंस पहँ आये॥
देखिन रक्त रंग सब नारी। गा हरचंद भई अँधियारी॥
गे ठगि गुंग देखि भये ज्ञाना। सबकर मंत्र औ मोल हिराना॥
तबलों हंस जो छांड़ डफारा। कत हेरूं वह समंद अपारा॥
गा सो रतन समंद महँ बूड़ी। हुइ तहँ पहूं लेउँ वह ढूंड़ी॥
रतन अमोल पड़ा वह माहां। हुइ मरजिया लेउ हस ताहां॥
मथहि दुभांति मथानी जीऊ। ले निकसूं वह मानिक घीऊ॥

अस मन जान अथाह महँ चला तहाँ देमूंड़।
है सो रतन औगाह महँ ले निकसूं तेहि ढूंड़॥

साथी बाहँ गहे समझावैं। सब बूड़े जो बूड़े पावैं॥

समझ देइ ना समझे कोई। जिउ दीने मन मोख न होई॥
तबहीं शब्द गही पुनि बाहां। बूड़ो कहाँ गई वह काहां॥
तहां सो नीर कोउ कर राजू। जो दल साज गयो वह काजू॥
तब सो फिरा है बेष भिखारी। तैं छल कीन लीन हर नारी॥
अब सो ओह खोज तेहि पावों। दुइ योगी तेहि देश सिधावों॥
रहे न बास सुबास छिपाई। होय पतार पड़े सो जाई॥

गाउँ गाउँ हेरो सबै ठाउँ ठाउँ सब देश।
दुइ दुइ यकसंग होइके करो जो योगी बेश॥

उत्तम हंस जो होइ भिखारी। कोउ नगर हेरो सब भारी॥
बार बार तहँ फेरी लायो। रहो सम्हार जहां लखि पायो॥
हूं हेरौं धावों चहुँ द्वीपा। रैन बसे तौ आय समीपा॥
तुम जब नगर मांझ महँ जायो। गुप्त रहो जिन आप लखायो॥
नैन रख्यो औ हिरदे राखो। परगट भेद न कतहूं भाखो॥
वे बैरी सुनि पावैं तोही। गहि मारैं कत छांड़ै द्रोही॥
वे बटपार न करें बिचारा। पढ़त भरोस छलैं संसारा॥

कब वह रहे छिपान अस जोहै जगत बखान।
जबहिं जान वह पावहूं तोहिं मिलाऊँ आन॥

सुन उपदेश उठा जो भिखारी। कारन वह को डारै मारी॥
हेरूं पात पात जग छानी। जान पतार पड़े जो जानी॥
कंथा मेल भयो बैरागी। कंठमाल सुमिरन धुनि लागी॥
भानु बदन पर छार चढ़ावा। कर किंगरी बैराग बजावा॥
औ गुलबदन भयो जो चेरा। लीना पंथ भीख गुरु केरा॥
गही छड़ी औ माला हाथा। मांगे भीख चला गुरु साथा॥
भये साथी सब बेप भिखारी। बरन बरन सब कंथा डारी॥

कोइ कंथा कारीगरे कोइ राती कोइ श्वेत।
भये भिखारी तंत सो एक मीत के हेत॥
बोहित खेइ घाट पर लाये। भये योगी यह देश सिधाये॥
मूरत यक जगमाहिं छिपानी। बिरह आग संसार उड़ानी॥
बसत एक भा ठग संसारा। शब्द एक पै अर्थ अपारा॥
बेद बिदित औ बेद अकेला। सतगुरु एक बेप बहु चेला॥
दुइ दुइ एक बरन यकरंगा। चले एक यकदिशि यकसंगा॥
दुइ दुइ मानुष बेप भिखारी। कर खप्पर हिय प्रेम उजारी॥
घर घर दरश के फेरी लावैं। मांगहिं भीख दरश निरतावैं॥
बारहि बार भिखारि बहु किये फिरें बहु बेष।
का जाने केहि बारही पड़े रूप कब देख॥
चला हंस दुइ योगी बेशा। पैठा जाय कोउ के देशा॥
कर किंगरी बैराग बजावै। शब्द अपार बिरह के गावै॥
रहे न थिर पाहन अस कोई। लागे शब्द उठे पुनि रोई॥
शब्द आह बिरहकी झारा। शब्द लाग रोवै संसारा॥
शब्द सो सोवत प्रान जगावे। शब्द प्रान ले स्वर्गदिखावै॥
शब्द सो प्रेमहिये भरदेई। शब्द सो प्रान कालहुइ लेई॥
शब्दरूपलख पाउ न कोई। शब्द सुनत मनबावर होई॥
शब्द रूप देखा जबहिं मोहो सब संसार।
छोड़न ताकर किंगरी कोइ सो गावनहार॥
पैठा नगर मांझ बैरागा। मांगै भीख नगरमहँ लागा॥
हिये जो प्रीति उठै कर सोई। दुखहिरदे सो परगट होई॥
बदन स्वरूप चढ़ाये क्षारा। फेरेलाग जो बारहिबारा॥
लैलै भीख जो निकसीं नारी। बावरहोइ लखैं जो भिखारी॥

देखिरूप तनरहै न ज्ञाना। शब्द हियेलागे जस बाना॥
पुरुष सो पाउँ टेक बैठावैं। तिरिया भीखदेइ बिलमावैं॥
छिन इक ठाढ़ न होइ भिखारी। भीखलिये सँगलागैं नारी॥

करें न वाञ्छा द्रव्य की लै धावैं सब कोइ।
फिरैं न बावरलौट घर सँग लागैं सब कोइ॥

यहतन बिरह कहांथिर रहै। मिलन बिछोह सदा तन दहै॥
बारद्विबार औ खोरा खोरी। भौंरीदेत फिरैं चहुँ ओरी॥
मिलै न कतहूँ मालति बासा। भँवर प्रानभा फिरै उदासा॥
तिरिया पुरुष लागसब साथा। धुनैं शीश औ मीजैं हाथा॥
भर भर थार रतन ले आवैं। टेकैं चरन अर्थ निरतावैं॥
केहिकेसुत तुम होउ भिखारी। कसतोहिंमाय जिये हत्यारी॥
काकर तैं खोयो असमूरी। जेहिगुन शीश चढ़ायो धूरी॥

उतर देत तन जरिगयो ढरें रकत के आंस।
लूक उठै तन भीतरे जरैं हाड़ औ मांस॥

गुप्तबियोग कहे नहिं सोई। गुरुजे प्रीति सो परगट होई॥
चरच पुरुष मन करैं बिचारा। है कोइ बिरह आगका जारा॥
कै यहिकर कोइ मीतहिराना। सो हेरे तन मन बौराना॥
रहै न प्रीति बहार छिपाई। छिपै न बास प्रेम मधुलाई॥
को यह योग करै जो खोजू। कहँराजा वह बिक्रम भोजू॥
बिरहाछाय रहा वह देशा। जहां फिरै वह योगी बेशा॥
हरिगा भोग भगत रंगराता। घर घर वही बिरहकी बाता॥

तन तन लागो बान अस मन मन भयो बियोग।
बन बन बावरपंख गुन घर घर बावर लोग॥

घर घर हेरैं औ सब ठाऊं। कतहुँ न सुना जवाहिर नाऊं॥

आये चल गढ़पति के द्वारा। आय बार कीना हंकारा॥
निकसी एक भीखलै चेरी। रही देखि ठगबेष अहेरी॥
देखि छत्र सूरजके माथा। रहो न ज्ञान प्रान कुछ हाथा॥
कहे भिखार योग हूं चेरी। केहिगुनदियो नगरमहँ फेरी॥
छिनयक बार होउ तुम बारा। आनौ रतन देहुँ भर थारा॥
असभरदेउँ जन्म नहिं खांगो। काहेक भीख नगरमहँ मांगो॥

तिय बातन बिलमावही योगी कत बिलमाय।
भीख न लीन न थिररहा चला सो फेरी लाय॥

रोवत फिरै भीखले नारी। गई जहां गढ़पतिकी बारी॥
बैठी तहँ कोउ चतुर नवेली। पूछा रोवत देख सहेली॥
कस तोहिंभीख भिखारन दीन्हे। कस आयस मन मैलाकीन्हे॥
की तोहिंते उन कीन ठठोली। कीतोले कछु अमृतबोली॥
बेगि सो बात बोल सतभाऊ। कस योगी तस करें उपाऊ॥
चाटक कीन्ह की मंत्र चलावा। कीबिपरीत जो तोहिं बौरावा॥
कहूं सो जाय पिता के पासा। योगिहि योग से करूं निरासा॥

बेष न कीन भिखारकर तोहिं केहि बावर कीन।
नेक बोल बौरे बचन तोहिं कस फिरत मलीन॥

रोवत बचन नारि अस बोली। नहिं बिपरीत न कीन ठठोली॥
योगी बेष बीर वै दोई। तिनका लखि आयों बुधिखोई॥
योगी अस लागें सो नाहीं। जानो पुत्र इन्द्र के आहीं॥
जग महँ ऐस स्वरूप न कोई। इन्द्र का पूत होय सो होई॥
चमकै जोत भस्म तन माहां। जानो सूर श्वेत घन पाहां॥
राते बरन जो कंथा गीऊ। बोले बचन लिये हर जीऊ॥
टेक चरन कतहूं बिलमाऊं। ठाढ़ न भा रोवत तब आऊं॥

कहा करूं तोरे बश नहिं जातिउँ वह साथ।
हूं आवत रोवत बहुरि प्रान गयो लै हाथ॥

सुन योगी की किरति बखानूं। लाग गयो हिरदे जसबानूं॥
कस योगी जेहि सरनहिं कोई। केहिबिधि चरन देखुँ मैं सोई॥
दासी होउँ तोर मैं दासी। गांसी मार काढ़ सो गांसी॥
जस देखै तस मोहिं दिखाऊ। चल यहिभांति न होय लखाऊ॥
लखै न मात पिता अरु भाई। नहिं मो लाज जाय जिउजाई॥
सुने न कोउ नैहर की बारी। नहिं वह लाय देइ मो गारी॥
रह न जाय बिन दर्शन देखी। पतंग भयो वह रूप बिशेखी॥

लाग आग दहके तनहिं बेग सो नीर ले आउ।
दर्शन देखो तौ बुझै होय न जगत लखाउ॥

सुन धन चहत प्रेम रस चाखा। भई कठिन चाहसि जिउराखा॥
प्रेम बस्तु जब हिरदे आवै। लाज सोग ले प्रान गँवावै॥
एक पाट दुइरहैं न राजा। एक हिये दुइटिकैं न काजा॥
जहां प्रेम तहँ रहे न ज्ञानू। जहां ज्ञान तहँ प्रेम न जानू॥
जहां प्रीति तहँ लोभ न जीऊ। जहां लोभ तहँ लाभ न पीऊ॥
उपजै जहां प्रेम तरु शाखा। स्वर्ग चढ़ै कर जाय न राखा॥
कैघर बैठ प्रेम तजि गोरी। कीचल देख राज तजि गोरी॥

प्रीति छिपाये नहिं छिपे रखो जो गाड़ पतार।
चढ़े सुबेली गगन तब कौन छिपावनहार॥

प्रेम कठिन सुन बिरहिन रोई। बेगि दिखाउ होइ सो होई॥
टेक बांह लेचढ़ी अटारी। रूपमुगति जिन कंचन ढारी॥
देखी झांक झरोखे गोरी। योगी जात चला जेहि खोरी॥
दृष्टि नीच नहिं शीश उठावै। बिरहिन लखे दरशनहिं पावै॥

तो गरहार दीन्ह भुइँ डारी। परत हार लखि लीन्ह भिखारी॥
हुइगई चार दृष्टि यक जोती। गारस बेध हिये जस मोती॥
कहेसि बिहँसि तुम लेउ उठाई। तुम कारन मैं दीन बहाई॥

बोला बिहँसि भिखार तब बेष देवकर लीन्ह।
पड़े गरे दुइबस्तु कहँ योगी चित अधर्दीन्ह॥

दिहसि बहाय काल की फांसी। हांसी हरे लाज औ हांसी॥
कहेसि कि ठाढ़ होउ वहिठाऊं। मैं तो हाथ देन का आऊं॥
चला पंथ वद्दडार ठगोरी। हुइ बावर धाई तब गोरी॥
लाज खोइ जो बाहर आई। ले गरहार देन का धाई॥
कंथा पकर भई तब ठाढ़ी। अरफी बेल प्रेम की गाढ़ी॥
लेउ हार मैं देउँ वियोगी। नहिं मोहिं लेउचहो तुमभोगी॥
तुम जानो मैं केहि की बारी। जोरे चलो तुम चाटक डारी॥

क्षार भयों ठग लिह्यो तुम लखि नैनन भरि मोहिं।
जस मोहिं कीनो बावरी कत छांड़ों मैं तोहिं॥

सुन बौरी तोहिं कस बौरानी। बावर बेष पड़े सो जानी॥
तेहि कारन बहुतन जिउ खोवा। जैं चित दीनसोदिनदिनरोवा॥
प्रथमहि मात पिता चित लावा। तिनभर जन्म नवै सुखपावा॥
रूपराज सो भयो उजारी। जोमम मीत सो देख भिखारी॥
महिपति राय चाटकर राजा। गयो लजाय लाजनहिंकाजा॥
वहिका कहूँ जो मोहिंअसकीन्हा। ते सुखभोग योग दुखदीन्हा॥
जिन मो प्रीत कीन्ह सो रोवा। तेहिकस चहनमानअब खोवा॥

अबहीं लागी मीठतोहिं पुनिहोगी बिषआग।
छांड़नारि बाटपारनी केहिका मीत बिराग॥

छांड़ कहत अभिको गहिठाढ़ी। जाऊं कहां लेउ जिउ काढ़ी॥

अबतो हाथ आनते खोई । आइउ निकस लाजकुल खोई ॥
पिता जो सुने मारजिउ डारे । मातासुनै घोरबिष मारै ॥
बारी सुनै देहि सो तारी । गारीलाय सो तोहिं भिखारी ॥
सो तोहिंछांड़ कहां पतिआऊं । जो तो संग न प्रान गँवाऊं ॥
योगिन होउ करूं तो बेशू । दासीबरन फिरूं सब देशू ॥
जानूं सबै अहै जस होना । पैकाकरूं पड्यो तो टोना ॥

हूंबारी सुल्तान की भयों उघार जग माहँ ।
तोहिं छांड़ तो रहूंकहँ गहिराखो तुम बाहँ ॥

अरझा फन्द जो योगि भिखारी । परखि न कालभई वह नारी ॥
भौंरा धाय गले लिपटानी । अकथकथानहिं जाय बखानी ॥
ज्यों ज्यों छांड़ छांड़ वह कहे । त्यों त्यों गहन पोढ़कै गहे ॥
तबलों चाह मंदिर महँ आई । धाई सखी सभी डर खाई ॥
लीनछुड़ाइ जो गहि अँकवारी । योगिन डार दीन दे गारी ॥
आन सो मंदिर पाट बिठावैं । देखें प्रान हाथ नहिं आवैं ॥
रोमहिरोम सून सब देहा । गातज प्रान रहा तन खेहा ॥

डसी जो कारी बिरहकी छिटक गई तन आग ।
बिष असलागी नरबसी चले गाड़रू भाग ॥

बैठी जान तीर औ थाहा । परी मँझधार अगम औगाहा ॥
चाखत खन अमृत असलागा । गानन बेधभयो बछनागा ॥
छिनछिन लहर लिये तन कांपै । रोयरोय सखियन का चांपै ॥
सुनसुलतान मंदिरमहँ आवा । चेरिनरोय सो धाय सुनावा ॥
कोउ नगर महँ फिरै भिखारी । जिन हरलीन बारिउजियारी ॥
कहँ सो चढ़ी मंदिरपर गोरी । लीन्हाप्रान जो डार ठगोरी ॥
बावर कीन्ह प्रानधन लीना । करो उपाय चहो जो कीना ॥

सुन सुलतान रिसान अति उठि आयो सुनवार।
आज्ञा कीन कि योगिकहँ लेआवैं बटपार॥

एक कहत धाये दश भोगी। लीनाघेर बाहँ गहि योगी॥
करगहि लीन औ भरम सुनावा। वहनिभरम कछु भरम न आवा॥
चेला गुरु दोऊ गहि लीना। आय शाह के आगे कीना॥
देखिसभा मुखपरखन लागे। यहीरूप कहुँ देखा आगे॥
इहिके स्वरूप दुल्हा वह अहा। यहयोगी असजाय न कहा॥
औ सुलतान कीन्ह जो ज्ञाना। योगी न होय कोइ सुलताना॥
मारन योग अहै सो नाहीं। करूँ विचार कौन धौं आहीं॥

मूरख मीन गँवार पति दुरजन नेक सुजान।
धर्मवन्त जिउ मार तो करे छिनक मन ज्ञान॥

पूछा सुनि योगी बटपारा। कस तोयँ छलत फिरतसंसारा॥
कस तुम आग नगर महँ बोयो। कस मो देशबसा तुम खोयो॥
कस तुम भीख द्रव्य नहिं लेहू। कस तुम घर घर फेरी देहू॥
मैंतो योग कीर्ति सुनपाई। ऊपर क्षार हिये निठुराई॥
तुम जस कीन कीन तस काजू। का मैं करूं अहूं जगराजू॥
जो ऊंचा सो नीच न करिये। नीचा ऊंच पाउँ ना धरिये॥
तुम सच कहो अहो केहिकेरे। केहि के खोज फिरौ चहुँओरे॥

लेउ न भिक्षा द्रव्य की फिरौ सो बारहिं बार।
पुनि केहि खोज अजानहोइ लखो राज दर्बार॥

सुन गढ़पती कहो न बिचारी। द्रव्य काज नहिं फिरैं भिखारी॥
योगी फिरैं दरश के आसा। दरश लाग आवैं केहु पासा॥
यह संसार दरश के हाटा। लिये दरश सो लागे बाटा॥
दरश काज जग तीरथ होई। दरश लाग आवैं सब कोई॥